ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

आश्विन-कार्तिक संवत् नानकशाही ५५७ अक्तूबर 2025 वर्ष १९ अंक २

गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री गुरु रामदास जी,
चूना मंडी, लाहौर (पाकिस्तान)

गुरुद्वारा भक्त नामदेव जी दरबार ,
नामदेव नगर, घुमाण, ज़िला गुरदासपुर

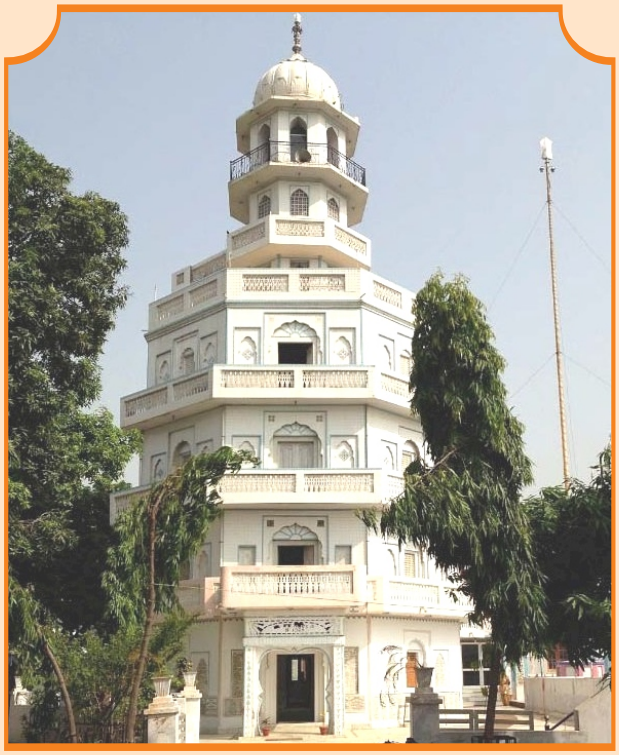

गुरुद्वारा तपिआणा साहिब, नामदेव नगर,
घुमाण, ज़िला गुरदासपुर

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

आश्विन–कार्तिक संवत् नानकशाही 557
वर्ष 19 अंक 2 अक्तूबर 2025

संपादक : सतविंदर सिंह
सहायक संपादक : जगजीत सिंह

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय–सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
श्री गुरु रामदास जी : जीवन, योगदान और ऐतिहासिक महत्त्व 7
–स. परमजीत सिंह सुचिंतन
धर्मांधता से मुक्ति का आह्वान : बंदीछोड़ दिवस 10
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
भक्त नामदेव जी का समतामूलक समाज का संकल्प 19
–प्रो. डॉ. संजय जाधव
बाबा बंदा सिंघ बहादुर के जन्म-स्थान की खोज 25
–डॉ. परमवीर सिंघ
सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया 28
–डॉ. मनजीत कौर
एक महान आंदोलन : सिंघ सभा लहर 32
–डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल
चीफ खालसा दीवान की स्थापना और इसके मुख्य कार्य 38
–डॉ. कशमीर सिंघ नूर
शहीद भाई प्रताप सिंघ 42
–डॉ. अवतार सिंघ
कभी १९४७, कभी १९८४ : जख्म अभी बाकी हैं 45
–स. सतबीर सिंघ लांबा
ख़बरनामा 47

गुरबाणी विचार

कतकि किरतु पइआ जो प्रभ भाइआ ॥
दीपकु सहजि बलै तति जलाइआ ॥
दीपक रस तेलो धन पिर मेलो धन ओमाहै सरसी ॥
अवगण मारी मरै न सीझै गुणि मारी ता मरसी ॥
नामु भगति दे निज घरि बैठे अजहु तिनाड़ी आसा ॥
नानक मिलहु कपट दर खोलहु एक घड़ी खटु मासा ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०९)*

तुखारी राग में उच्चरित 'बारह माहा' नामक बाणी की इस पावन पउड़ी में प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी कार्तिक मास के वातावरण और भारत भू-खंड में इस मास की कृषि-क्रियाओं के दृष्टांत द्वारा जीव-स्त्री को विषय-विकारों से मुक्ति प्राप्त कर जीवन का उद्देश्य पूर्ण करने की दिशा में चलने का गुरमति मार्ग बख़्शिश करते हैं।

गुरु जी कथन करते हैं कि हे भाई! जिस प्रकार किसान खरीफ की फसल को काटकर उपज प्राप्त कर लेता है उसी प्रकार जीव अपने किए कर्मों का फल प्राप्त करता है अर्थात् किए गए कर्म जीव को संस्कार के रूप में मिल जाते हैं।

सत्कर्मों के फलस्वरूप जीव के अंत:करण में सहजावस्था का प्रकाश हो जाता है और उसे प्रभु का सामीप्य प्राप्त हो जाता है। फिर जीव-स्त्री के सत्कर्मों द्वारा जागृत आत्मिक ज्योति से उसके हृदय-घर में उमंग एवं उत्साह की स्थिति बनी रहती है। जो जीव-स्त्री सत्कर्म न कर पाई वह अवगुणों में फंस कर मानों जीते-जी (आत्मिक मौत) मर गई। जो जीव-स्त्री विकारग्रस्त नहीं हुई वही जीवन-लक्ष्य हासिल करने में सफलता हासिल कर पाई।

गुरु जी फरमान करते हैं कि जिन जीवों को प्रभु अपना नाम, अपनी भक्ति प्रदान कर देते हैं वे सदा सहजावस्था में विश्राम करते हैं। उनके भीतर सदैव प्रभु-मिलाप की इच्छा बनी रहती है। वे एकमात्र यही अरदास करते हैं कि हे नानक! जो विकार आपको पाने के मार्ग में बाधा बने हुए हैं वे सभी विकार अपनी कृपा द्वारा दूर कर दो! (हृदय-घर के) बंद द्वार खोलकर निहाल कर दो, ताकि छ: मास में आने वाली कृषक की फसल के सामान हमारी जीवन-किरत–कमाई हमारी झोली में आ सके। कहीं हमारा यह जीवन प्रभु-मिलाप रूपी फसल-उपज से रहित होकर व्यर्थ ही न चला जाए!

संपादकीय

इह सब छूटैं तब हम जावैं।

गुरु 'बंदीछोड़' है। गुरु जीवों को जीवन-मुक्त करने वाला है। गुरु का धरती पर आगमन ही जीवों को बंधनों से मुक्त करने के लिए होता है। गुरु को कौन बंदी बना सकता है? गुरु की लीला अपरंपार होती है। गुरु का व्याख्या करने का ढंग निराला होता है। गुरु का समूचा जीवन ही गुरमति की व्याख्या है। गुरु *"अपना बिगारि बिरांना सांढै"* का अर्थ समझाने के लिए मज़लूमों के लिए 'हा' का नारा बन कर बाबर के कैदख़ाने में कैद हो जाता है। गुरु मानवता को तृप्ति प्रदान करने के लिए स्वयं गरम तवी पर बैठ जाता है। गुरु धर्म की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए चाँदनी चौक में जाकर अपना शीश भेंट कर देता है। जिस किले की कैद में से कभी कोई जिंदा बाहर न आया हो, गुरु उस किले में जीने की आशा खो चुके कैदियों को जीवन-दान देने के लिए बंदी बन कर किले में कैद हो जाता है। अपनी रिहाई का आदेश सुन कर बंदीछोड़ दाता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब अपना पक्ष सुना देते हैं :

इह सब छूटैं तब हम जावैं।
नाहित इन ढिग सदा रहावैं। *(पंथ प्रकाश, कृत ज्ञानी गिआन सिंघ)*

बादशाह के कहने पर कि जितने कैदी राजा गुरु जी का दामन थाम कर किले में से बाहर आ जाएँ, उन्हें रिहा कर दिया जायेगा, तब गुरु जी बावन कलियों वाला चोगा पहन कर किले में से बाहर आते हैं और *"अंध कूप ते काढिअनु लड़ु आपि फड़ाए"* वाली बख़्शिश कर बावन राजाओं को भी बाहर ले आते हैं। 'पंथ प्रकाश' का कर्ता स्पष्ट करता है :

सभ राजे फड़ बाहर आए।
हुते बवंजा मरे जीवाए।

गुरु जी का दामन थाम कर ग्वालियर के किले में से रिहा होना बावन राजाओं के लिए सचमुच ही दूसरा जन्म लेने के समान था। उन्हें यह जीवन-दान गुरु का दामन थामने से ही प्राप्त हुआ था।

गुरु साहिबान ने शब्द की सहायता के बिना *"बिनु सबदै मुआ है सभु कोइ"* के अनुसार

आत्मिक रूप से मृत मानवता को गुरबाणी के संग जोड़ कर आत्मिक जीवन का दान प्रदान किया है। जीवों के उद्धार के लिए 'नानक निरंकारी ज्योति' दस जामों (शरीरों) में परिवर्तित होती रही। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अंतिम समय में तख़्त सचखंड श्री हजूर अबिचल नगर साहिब, नांदेड़ में मानवता पर महान परोपकार करते हुए *"लड़ पकड़ाइ शबद का रूप"* शब्द-गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संग जोड़ दिया और "बखश कीउ खालस को जामा" गुरु-पंथ को रहनुमाई प्रदान की। अब हम "ग्रंथ पंथ गुर मानीऐ" के आदेश की पालना करते हुए 'गुरु-ग्रंथ' और 'गुरु-पंथ' के साथ जुड़ कर सांसारिक एवं मानसिक बंधनों से निजात पानी है। पंथ-प्रवानित सिक्ख रहित मर्यादा में स्पष्ट किया गया है कि "एक अकाल पुरख के अलावा किसी देवी, देवता, अवतार, पैग़म्बर की उपासना नहीं करनी। दस गुरु साहिबान को और उनकी बाणी के अलावा किसी अन्य को अपना मुक्ति-दाता नहीं मानना।"

बंदीछोड़ दिवस पर जहाँ हमने घरों में दीपमाला कर इस परंपरा को निभाना है, वहाँ अपने हृदय रूपी घरों में शब्द रूपी ज्ञान का दीपक जला कर अपने जीवन को आलोकित करना है :

सतिगुर सबदि उजारो दीपा॥

बिनसिओ अंधकार तिह मंदरि रतन कोठड़ी खुल्ही अनूपा॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८२१)

दीपावली की रात में जो दीपक जलाए जाते हैं वे सुबह तक बुझ जाते हैं, जबकि 'नाम का दीपक' *"डोलै वाउ न वडा होइ"* के अनुसार निरंतर हमारे जीवन को आलोकित करने में सक्षम है।

आओ! बंदीछोड़ दिवस मनाते हुए यह अरदास करें कि बावन राजाओं की भाँति कहीं हमें भी शब्द-गुरु का दामन थामने की बुद्धि प्राप्त हो जाए और हम गुरमति के धारक बन विषय-विकार, वहम-भ्रम, मढ़ी-मशान, व्रत, श्राद्ध, देहधारी गुरु-डंम आदि जैसे अज्ञानता भरे कर्मों के बंधन से मुक्त होकर अंधकारमय जीवन को त्याग कर प्रकाशमय जीवन के धारक बनें!

श्री गुरु रामदास जी : जीवन, योगदान और ऐतिहासिक महत्त्व

*–स. परमजीत सिंघ सुचिंतन**

सिक्ख धर्म का इतिहास मानवता, समानता और भाईचारे के सिद्धांतों पर आधारित है। इस धर्म की नींव श्री गुरु नानक देव जी ने रखी और गुरु साहिब जी के उत्तराधिकारियों ने इसे और मजबूत व संगठित किया। इस क्रम में चौथे गुरु, श्री गुरु रामदास जी का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने न केवल धार्मिक स्तर पर सिक्ख धर्म के अनुयायियों को दिशा दी बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से भी सिक्ख धर्म को एक स्थायी आधार प्रदान किया। उनकी सबसे बड़ी देन 'अमृतसर' नगर की स्थापना है, जिसने सिक्ख धर्म को विश्वव्यापी पहचान दिलाई।

जन्म और प्रारंभिक जीवन : श्री गुरु रामदास जी का जन्म कार्तिक वदी २ (२५ आश्विन) संवत् १५९१ तद्नुसार २४ सितंबर, सन् १५३४ ई. को लाहौर के चूना (चूनी) मंडी क्षेत्र में हुआ। आपके पिता का नाम भाई हरिदास जी और माता का नाम माता दया कौर जी था। बचपन में ही आपके माता-पिता का देहांत हो गया था, इसलिए आपका पालन-पोषण आपकी नानी जी ने किया था। आप जी बचपन में चनों की घुंगनियां बना कर बाज़ार में बेचते थे तथा घर का खर्च चलाने में मदद करते थे।

श्री गुरु रामदास जी के बाल्यकाल का नाम भाई जेठा जी था। बचपन से ही आपका स्वभाव भक्ति, सेवा और दया से परिपूर्ण था। कठिन परिस्थितियों में भी आपने कभी धैर्य और विनम्रता का साथ नहीं छोड़ा। आप जी गुरबाणी सुनने और सत्संग करने में गहरी रुचि रखते थे।

श्री गुरु अमरदास जी से भेंट और विवाह : युवावस्था में भाई जेठा जी, अपनी नानी जी के साथ, सत्संग और सेवा की खोज में श्री गुरु अमरदास जी के पास गोइंदवाल साहिब पहुँचे। यहाँ भाई जेठा जी ने तन-मन-धन से सेवा की और संगत में प्रेम व भक्ति का वातावरण बनाया। श्री गुरु अमरदास जी, भाई जेठा जी की सेवा-भावना और निष्ठा से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपनी सुपुत्री बीबी भानी जी का विवाह भाई जेठा जी के संग कर दिया।

यह विवाह केवल पारिवारिक संबंध नहीं था बल्कि आध्यात्मिक परंपरा की नींव थी। बीबी भानी जी ने भी पति के साथ मिलकर सेवा और त्याग में अपना जीवन समर्पित कर दिया।

**७६, फेस-३, अर्बन अस्टेट, दुग्गरी, लुधियाना—१४१०१३, फोन : ९७७९१-२४५००*

गुरुआई की सेवा : भाई जेठा जी ने सेवा, निष्ठा और भक्ति द्वारा श्री गुरु अमरदास जी के विश्वास पर खरे उतरे थे। जब श्री गुरु अमरदास जी के उत्तराधिकारी चुनने का समय आया तो उन्होंने भाई जेठा जी को ही गुरुआई की सेवा बख़्शिश की। भाई जेठा जी सन् १५७४ ई. में, श्री गुरु रामदास जी के रूप में सिक्खों के चौथे गुरु बने।

धार्मिक और सामाजिक योगदान

समानता का संदेश : श्री गुरु रामदास जी ने जात-पांत, ऊँच-नीच और सामाजिक भेदभाव को दृढ़ता से नकारा। उन्होंने संगत (धार्मिक सभा) और पंगत (सामूहिक भोजन) की परंपरा को और मजबूत किया।

विवाह-संस्कार में सुधार : श्री गुरु रामदास जी ने 'अनंद कारज' (सिक्ख विवाह) परंपरा को सरल और आध्यात्मिक बनाया। उन्होंने 'चार लावां' की परंपरा स्थापित की, जिसमें दंपत्ति ईश्वर को साक्षी मानकर 'अनंद कारज' करते हैं। किसी भी सिक्ख लड़के या लड़की के 'अनंद कारज' के समय, श्री गुरु रामदास जी द्वारा सूही राग में उच्चरित चार सबद (जिन्हें लावां के सबद भी कहा जाता है) पढ़े जाते हैं व गायन किए जाते हैं। जब रागी सिंघ, लावां के सबद गायन करते हैं तो उस समय वर-वधू श्री गुरु ग्रंथ साहिब की परिक्रमा करते हैं। जब ग्रंथी सिंघ लावां के सबद पढ़ते हैं तो वर-वधू इन सबदों को ध्यानपूर्वक सुनते व समझते हैं। यह परंपरा आज भी 'अनंद कारज' का अभिन्न हिस्सा है।

सेवा और विनम्रता : श्री गुरु रामदास जी का जीवन इस बात का प्रमाण है कि सेवा और विनम्रता से ही मनुष्य ईश्वर तक पहुँच सकता है। उन्होंने सिक्ख संगत को सदैव विनम्र रहने और गरीबों-दुखियों की सेवा करने का उपदेश दिया।

श्री अमृतसर साहिब की स्थापना : नम्रता के पुंज श्री गुरु रामदास जी का सबसे बड़ा और ऐतिहासिक योगदान 'अमृतसर' नगर की स्थापना है। आज इस शहर को श्रद्धा, प्यार व सम्मान से 'श्री अमृतसर साहिब' कहा जाता है। श्री गुरु रामदास जी ने, श्री गुरु अमरदास जी के निर्देशानुसार 'अमृत सरोवर' की खुदाई करवाई। इसी सरोवर के चारों ओर आप जी ने 'चक्क रामदासपुर' (श्री अमृतसर साहिब) बसाया तथा इसी नगर को प्रचार का केंद्र बनाया। इस नए शहर की आर्थिकता को मज़बूत करने के लिए, आप जी ने ५२ प्रकार के व्यवसायों से सम्बन्धित व्यापारियों-व्यवसायियों को इस शहर में बसाया। जिन बाजारों में इन व्यापारियों-व्यवसायियों ने अपने व्यवसाय स्थापित किए, उन बाजारों के नाम भी इन व्यापारों-व्यवसायों के नाम से ही प्रसिद्ध हो गए।

आगे चलकर श्री गुरु रामदास जी के सुपुत्र और गुरु-घर के उत्तराधिकारी, श्री गुरु अरजन देव

जी ने इसी स्थान पर 'श्री हरिमंदर साहिब' का निर्माण करवाया। श्री अमृतसर साहिब नगर ने सिक्ख धर्म को स्थायी रूप से धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक केंद्र प्रदान किया।

साहित्य और गुरबाणी : श्री गुरु रामदास जी एक महान कवि और संत भी थे। श्री गुरु रामदास जी द्वारा कुल ३० रागों में उच्चरित सबद, असटपदिआं, सलोक, पउड़िआं व छंत इत्यादि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शोभायमान हैं। आप जी की बाणी में भक्ति, प्रेम, विनम्रता और सेवा का गहरा संदेश है। आप जी ने मानवीय जीवन में अहंकार, लालच और क्रोध से दूर रहकर नाम-सुमिरन करने पर बल दिया।

समकालीन राजनीतिक परिस्थितियां : मुगल सम्राट अकबर, श्री गुरु रामदास जी के समकालीन भारत का शासक था। अकबर धार्मिक दृष्टि से अपेक्षाकृत सहिष्णु था।

सामाजिक परिस्थितियां : उस समय समाज में जात-पांत, ऊँच-नीच और अंधविश्वास बहुत गहराई से फैले हुए थे। उच्च वर्ग और नीच वर्ग का भेदभाव आम बात थी। स्त्रियों की स्थिति भी अत्यंत दयनीय थी। श्री गुरु रामदास जी ने इन कुरीतियों का विरोध किया और सभी को समान अधिकार देने की शिक्षा दी।

धार्मिक परिस्थितियां : भारत में उस समय हिंदू और मुस्लिम धर्म प्रमुख थे। हिंदू समाज में बाह्य आडंबर और कर्मकांड का प्रभाव था। मुस्लिम समाज में कट्टरता दिखाई देती थी। श्री गुरु रामदास जी ने दोनों से अलग एक सरल, आध्यात्मिक और समानता पर आधारित मार्ग दिखाया।

अंतिम समय : अपना अंतिम समय नजदीक जानते हुए, आप जी ने गुरुआई की सेवा अपने सबसे छोटे सुपुत्र श्री गुरु अरजन देव जी को बख़्शिश कर दी। श्री गुरु रामदास जी लगभग ७ वर्ष गुरुआई की सेवा करके व कुल ४७ वर्ष की सांसारिक आयु पूरी करके भादों सुदी ३ (२ आश्विन), संवत् १६३८ तद्नुसार १ सितंबर, सन् १५८१ ई. को गोइंदवाल साहिब, ज़िला तरनतारन (पंजाब) में ज्योति-जोत समा गए।

निष्कर्ष : श्री गुरु रामदास जी का जीवन त्याग, सेवा, भक्ति और मानवीय मूल्यों का प्रतीक है। उन्होंने श्री अमृतसर साहिब शहर की स्थापना करके सम्पूर्ण मानवता को एक स्थायी धार्मिक केंद्र दिया, विवाह-संस्कार को सरल और पवित्र बनाया तथा बाणी के माध्यम से मानवता को एक अकाल पुरख की भक्ति का मार्ग दिखाया।

श्री गुरु रामदास जी की शिक्षाएँ आज भी प्रासंगिक हैं और हमें यह संदेश देती हैं कि सच्ची महानता सेवा, विनम्रता और प्रेम में है। श्री गुरु रामदास जी सिक्ख धर्म के लिए ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रेरणा और मार्गदर्शन का स्रोत हैं।

धर्मांधता से मुक्ति का आह्वान : बंदीछोड़ दिवस

*–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के गुरुगद्दी पर आसीन होने से पूर्व श्री गुरु नानक देव से लेकर श्री गुरु अरजन देव जी तक पांच गुरु साहिबान, संसार और विशेष रूप से सिक्खों को धर्म एवं आध्यात्म के विभिन्न पक्षों से अवगत करा चुके थे। श्री गुरु नानक देव जी ने सच के विराट रूप के दर्शन कराये। श्री गुरु अंगद देव जी ने समर्पण और श्री गुरु अमरदास जी ने धर्म में सेवा के महत्व को प्रकट किया। श्री गुरु रामदास जी जब गुरुआई पर असीन हुए तो इन तीनों तत्वों को ग्रहण करने के लिये जीवन-मर्यादा को दृढ़ कराया। श्री गुरु अरजन देव जी ने इन्हें संयम का आधार प्रदान कर धर्म को अविचल स्वरूप प्रदान किया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब भली-भांति विदित थे कि धर्म पर अडोल रहना अत्यंत कठिन है। देश-काल की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियां सदैव धर्म के लिये गंभीर चुनौती बनी रहती हैं। श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु अरजन देव जी तक ने इन चुनौतियों का सामना कर धर्म की प्रतिष्ठा को अक्षुण्ण रखने का महान उपकार किया था। किन्तु, जब परिस्थितियां विकट होने लगें तो उनसे निपटने का ढंग परिवर्तित करना आवश्यक हो जाता है। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने गुरुगद्दी पर बैठते ही इसके संकेत दे दिये थे जब आपने दो कृपाणें एक साथ धारण कीं और शीश पर दसतार एवं कलगी सजाई। गुरु सदैव पूर्ण समर्थ, सक्षम रहा है। श्री गुरु नानक देव जी का युगों से स्थापित मान्यताओं व परम्पराओं को चुनौती देना, संसार के हर कोने में जाकर अपनी बात स्पष्टता के साथ कहना उनके महान साहस और दृढ़ निश्चय का प्रतीक था। सभी गुरु साहिबान ने इस गुण को उत्तराधिकार में प्राप्त किया। धार्मिक भ्रांतियों से लोगों को मुक्त करना धर्म के स्थापित केंद्रों को कैसे पसंद आ सकता था! गुरु साहिबान ने तर्क से, संवाद से, संयम से उन्हें नि:शब्द किया।

देश में मुगल शासन स्थापित हो चुका था। सत्ता से प्रश्रय प्राप्त कर इसलाम के प्रसार का अभियान भी जोर पकड़ रहा था। इस संदर्भ में श्री गुरु अमरदास जी का गोइंदवाल साहिब में और श्री गुरु रामदास जी का लाहौर में तत्कालीन शासक अकबर से हुआ निर्भीक संवाद सिक्ख पंथ के आत्मिक बल को प्रकट करने वाला था। श्री गुरु

*ई–१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ – २२६०१७, फोन : ९४१५९६०५३३, ८४१७८५२८९९

अरजन देव जी की लाहौर में हुई शहीदी एक नई चुनौती थी जिसे श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने सच, समर्पण, सेवा, शील और संयम की समन्वित दृष्टि से परास्त कर एक ऐसा गौरवशाली इतिहास रचा जो सदैव मानवता को आश्वस्त करता रहेगा कि धर्म का स्थान संसार में सर्वोच्च और सर्वश्रेष्ठ है।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब उस समय मात्र बारह वर्ष के थे जब पिता श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी हुई। यह सिक्ख पंथ की प्रथम शहीदी थी। अपने गुरु और अपने पिता की इस शहीदी को श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अत्यंत धैर्य और दृढ़ता से ग्रहण किया। आप प्रथम सिक्ख गुरु थे जिन्होंने शस्त्र धारण किये थे। इस पर शंकायें भी व्यक्त की गईं। गुरु साहिब ने अत्यंत धैर्य और संयम से उन सभी शंकाओं का समाधान किया।

पूर्व के गुरु साहिबान की ही भांति श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पूरे जीवन में परमात्मा के हुक्म की सहज स्वीकार्यता दृष्टिगोचर होती है। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने स्वयं शस्त्र धारण करने के साथ ही सिक्खों को भी निर्भीक बनाने के अविलम्ब प्रयास आरम्भ कर दिये। श्री हरिमंदर साहिब के ठीक सामने 'अकाल बुंगा' का निर्माण कराया जिसे बाद में 'श्री अकाल तख़्त साहिब' नाम से जाना जाने लगा। इस तख़्त पर गुरु साहिब नित्य दोपहर के बाद जब विराजमान होते तो आई हुई संगत से संवाद करते, उनके प्रश्नों का निदान करते। गुरबाणी का गायन किया जाता था। सांय काल में 'सो दरु रहरासि साहिब' का पाठ किया जाता। इसके पश्चात एक अन्य दरबार लगता जिसमें राग कलियाण तथा राग कानड़ा के शबद गायन किये जाते। ढाडी भाई नत्था- भाई अब्दुल्ला वीर रस की वारें गायन करते, जिससे सिक्खों में वीरता का भाव उत्पन्न होता। प्रात: काल के नितनेम और श्री हरिमंदर साहिब में शबद-कीर्तन के पश्चात जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब शिकार को जाते तो सिक्खों को भी अपने साथ ले जाया करते थे। यह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का एक सुविचारित और सुनिश्चित नियोजन था जिसके अंतर्गत वे सिक्खों में गुरबाणी के अनुकूल वीरता और साहस भर रहे थे, ताकि वे अपने धर्म का श्रेष्ठता से निर्वाह करने के साथ ही अपने धर्म और विश्वास की स्वयं रक्षा करने के योग्य बन सकें। गुरु साहिब ने गुरुआई पर आसीन होते ही एक महत्वपूर्ण हुकमनामा जारी किया था जिसमें सिक्खों से कहा गया था कि वे गुरु-घर में अब शस्त्र और घोड़े भी भेंट के लिये लाया करें। यह भी सिक्खों को वीरता के प्रतीकों के साथ जोड़ने का एक सफल प्रयोग था। जिन्होंने कभी अस्त्रों-शस्त्रों का स्पर्श तक नहीं किया था वे उन्हें सहेजने लगे थे। शीघ्र ही एक सिक्ख सेना तैयार हो गई जिसमें एक से एक बांके और निडर जवान शामिल थे।

धर्म को स्वयं ताकतवर होना पड़ता है। धर्म किसी बाह्य शक्ति पर आश्रित रह कर प्रफुल्लित नहीं हो सकता क्योंकि यह अंतर्मन की ग्राह्यता का विषय है। यह भूल मुगल शासकों ने की थी जब उन्होंने राजसी शक्ति से अपने धर्म इसलाम के प्रसार का प्रयास किया। धर्म एक पवित्र भावना है जो अपने आप में सम्पूर्ण है। धर्म किसी व्यक्ति नहीं परमात्मा के प्रति उत्तरदायी बनाता है। इससे जीवन-दृष्टि बदल जाती है।

गुरु साहिबान ने सिक्खों को संवारा। सिक्खों में ऐसी आत्मिक चेतना जाग्रत की जो अपराजेय थी अर्थात् हर स्थिति में फल देने वाली थी। यदि यह परमात्मा के दरबार में सहायक थी तो संसार में भी उसकी क्षति करना किसी के लिये सम्भव नहीं था। अपने धार्मिक विश्वास के कारण ही सिक्ख विकट से विकट परिस्थितियों में भी जूझ कर उभरते रहे हैं और सर्वत्र सफल होते रहे हैं। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी यदि चाहते तो अपना राज्य स्थापित कर सकते थे किन्तु राज्य उनके लिये महत्वहीन था। उनके लिये महत्वपूर्ण था तो मात्र परमात्मा और सद् आचरण। बाबा बंदा सिंघ बहादुर और महाराजा रणजीत सिंघ के बाद सिक्खों का राज्य कभी भी स्थापित नहीं हुआ। इसके बावजूद सिक्ख धर्म प्रफुल्लित हुआ तो अपने सैद्धांतिक समर्पण और विश्वास के कारण। आज पूरे विश्व में सिक्ख अपनी उपस्थिति अंकित करा रहे हैं और प्रभावशाली स्थिति में हैं बिना किसी राजकीय संरक्षण के। उन्होंने धर्म को पहचाना और मन में बसाया, जिसकी सत्ता सर्वदा अजेय है। उनका विश्वास कर्मकांड, पाखंड, हठजनित नहीं, मन की साधना का फल था, जिसे उसने गुरु से सीखा था। मन की साधना के इस फल को श्री गुरु अरजन देव जी के निम्न वचन से समझा जा सकता है :

जो किछु करै सोई सुखु जाना ॥
मनु असमझु साधसंगि पतीआना ॥
डोलन ते चूका ठहराइआ ॥
सति माहि ले सति समाइआ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८९०)

सुख हो अथवा दुख, एक सच्चा सिक्ख उसे परमात्मा का हुक्म और न्याय मान कर ग्रहण करता है। वह परमात्मा से प्रेम करता है, उसकी प्रत्येक रचना और उसके प्रत्येक हुक्म से प्रेम करता है, उसमें सुख का अनुभव करता है। मन सुख और दुख दोनों में सहज रहता है, क्योंकि मन ने गुरु, गुरु-शबद के संग रह कर परमात्मा के हुक्म में रहना सीख लिया है। इसके लिये उसने माया के मोह का त्याग किया है, विकारों का त्याग किया है। सिक्ख ने गुरु के ज्ञान से जान लिया है कि किसी सांसारिक शक्ति पर भरोसा करना व्यर्थ है— "मानुख की टेक ब्रिथी सभ जानु॥ देवन कउ एकै भगवानु॥" इस ज्ञान से मन स्थिर होकर

परमात्मा पर टिक गया। सिक्ख जानता है कि परमात्मा जगत में एकमात्र दयालु, कृपालु, रक्षक, प्रतिपालक, सहायक, दाता और कर्ता है, इसलिये परमात्मा पर उसका भरोसा अडोल हो जाता है। अपने गुणों से गुणनिधान परमात्मा में वह रम जाता है। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने सिक्खों को परमात्मा में रम जाना सिखाया। यह अवस्था सिक्खों में वीरता का भाव भरने में सहायक सिद्ध हुई। श्री गुरु नानक देव जी सिक्खों को निडर बनाने का आधार पहले ही स्थापित कर चुके थे :

डरि घरु घरि डरु डरि डरु जाइ॥
सो डरु केहा जितु डरि डरु पाइ॥
तुधु बिनु दूजी नाही जाइ॥
जो किछु वरतै सभ तेरी रजाइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १५१)

परमात्मा के हुक्म में रहने से परमात्मा मन में बस जाता है। मन में यदि एक परमात्मा का हुक्म मानने की वचनबद्धता रहे और सदैव यह भय बना रहे कि मन कभी भी परमात्मा के हुक्म की अवज्ञा न कर दे तो संसार का कोई अन्य भय मन में समा ही नहीं सकता। परमात्मा का भय ऐसा है ही नहीं कि कोई अन्य भय उसमें समा सके। संसार में जो भी घटित हो रहा है वह परमात्मा की इच्छा से ही हो रहा है। यदि परमात्मा का हुक्म अटल है तो भय कैसा! इससे परमात्मा का भय भी परमात्मा के प्रति समर्पण और प्रेम में परिवर्तित हो जाता है। श्री गुरु नानक देव जी ने कहा कि यदि मनुष्य भयभीत हो रहा है तो इसका अर्थ है कि उसका मन अशुद्ध है, उसमें माया और विकारों का शोर उठ रहा है—

"डरि डरि डरणा मन का सोरु॥"

मनुष्य के मन में अनेक प्रकार के डर बने रहते हैं। कुछ डर दूर होते हैं तो कुछ नए डर जन्म ले लेते हैं। वह एक तरह से भय का बंदी बना रहता है। उसके जीवन- व्यवहार में उसके भय परिलक्षित होते हैं। निंदा, ईर्ष्या, क्रोध, चाटुकारिता, घात-प्रतिघात, विश्वासघात, धोखा, ठगी, अन्याय, पाप आदि मनुष्य के अंदर व्याप्त भय का ही परिणाम होते हैं। ये जीवन भर मनुष्य को चैन से बैठने नहीं देते हैं और त्रास, संताप का कारण बनते हैं। जैसे कारागार में बंद एक कैदी अपनी स्वेच्छा से कुछ नहीं कर सकता, उसे कारागार के सभी नियम मानने पड़ते हैं वैसे ही मन के डर मनुष्य के समस्त व्यवहार को अपने नियंत्रण में रखते हैं। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को एक उपमा 'बंदीछोड़' की दी जाती है। सिक्खों को भय से मुक्त करना गुरु साहिब के 'बंदीछोड़ रूप' का एक मुख्य रंग था। सिक्ख निडर तब हुए जब परमात्मा के डर को धारण कर संसार से प्रत्येक डर से मुक्त हो गये। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की सेना में २२०० जवान स्थायी रूप से सदैव तैनात रहते थे और उनके अस्तबल में सात सौ घोड़े रहते थे। वैसे तो इसे देख कर ही सिक्खों के सारे भय दूर

हो जाते थे। गुरु साहिब के शीश पर सजी हुई कलगी सदैव सिक्खों के मन में विजय की भावना उत्पन्न करती थी और वे निर्भीक होकर परमात्मा में मन को टिका पाते थे। श्री गुरु अरजन देव जी का उपदेश भी यही है :

निरभउ होइ भजहु भगवान॥
साधसंगति मिलि कीनो दानु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २०१)

गुरु साहिब ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना २०१ पर सुशोभित अपनी बाणी में कहा है कि स्थिर मन से की गई भक्ति ही परमात्मा को स्वीकार होती है और वह अपने जन पर कृपा कर उसके सारे कार्य सिद्ध करता है। वह सभी वैरियों का संहार कर अपने जन की रक्षा करता है और सभी सांसारिक शक्तियों को उसके अधीन, अनुकूल कर देता है। ऐसा जन सदैव परमात्मा की भक्ति के रस में आनंदित रहता है। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के काल में मुगलों के बढ़ते दबाव के बाद भी सिक्खी के प्रफुल्लित होने का यह एक बड़ा कारण था कि उन्होंने सिक्खों को भय से बाहर निकाला था। आध्यात्मिक निर्भयता का प्रताप ही ऐसा होता है। इस संदर्भ में उत्तराखंड राज्य के गुरुद्वारा श्री नानकमत्ता साहिब का प्रसंग उल्लेखनीय है। इस स्थान को श्री गुरु नानक देव जी ने अपने चरणों से पवित्र किया था और सिक्खी के प्रचार का केंद्र बनाया था। बाद में सिद्धों, योगियों ने इस पर जबरन कब्ज़ा कर लिया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को जब प्रार्थना की गई तो गुरु साहिब स्वयं दल-बल के साथ यहां आये। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को देखते ही वर्षों से वहां कब्जा जमाये बैठे सिद्ध भाग गये और वह स्थान पुन: सिक्खों के नियन्त्रण में आ गया।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने जिस सक्षमता से सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार के कार्य को आगे बढ़ाया, उसकी चर्चा दिल्ली के तख़्त पर बैठे जहांगीर तक भी पहुंची। जहांगीर और उसके दरबारियों को श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी के पश्चात भ्रम हो गया था कि अब सिक्ख पंथ भयवश सिमट कर महत्वहीन हो जायेगा। किन्तु, नवीनतम सूचनायें उसे चिंतित करने वाली थीं। जहांगीर ने अपने दरबारियों से विचार-विमर्श कर उन्हें दिल्ली आने का संदेश भेजा। जहांगीर का संदेश लेकर उसके ख़ास दरबारी वजीर खान और किंदबेग श्री अमृतसर साहिब गये। गुरु साहिब ने जब इस आमंत्रण को लेकर संगत से विचार किया तो भिन्न-भिन्न राय सामने आई। बाबा बुड्ढा जी और भाई सालो जी जैसे सिक्खों ने कहा कि गुरु साहिब को जाना चाहिये जबकि अन्य सिक्ख जाने के विरुद्ध थे। कुछ सिक्खों ने यह राय भी दी कि गुरु साहिब के स्थान पर योग्य सिक्खों का एक समूह जहांगीर से मिलने जाये। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने दिल्ली जाने का निर्णय किया क्योंकि न तो

उनके मन में कोई भय था और न कोई पूर्वाग्रह था, जबकि छ: वर्ष पूर्व ही उनके पिता श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी जहांगीर के ही आदेश के फलस्वरूप हुई थी। गुरु साहिब ने अपनी दिल्ली-यात्रा की तैयारी आरम्भ की। उन्होंने श्री हरिमंदर साहिब के नित्य कार्य-व्यवहार, मर्यादा की जिम्मेदारी बाबा बुड्ढा जी को और आध्यात्मिक प्रसार की जिम्मेदारी भाई गुरदास जी को प्रदान की, ताकि उनकी अनुपस्थिति में पंथ के कार्य सुचारू रूप से चलते रहें। श्री अमृतसर साहिब से प्रस्थान करने से पूर्व गुरु साहिब ने सिक्खों को हुक्म दिया कि श्री हरिमंदर साहिब का सत्कार सदैव बनाये रखें, मानव-तन की किसी भी तरह की अशुद्धता से इस स्थान को अपवित्र न किया जाए, किसी भी तरह का अनाचार न हो। आध्यात्मिक व्यक्ति, यात्री, अपरिचित, निर्धन, असहाय लोग आयें तो उनका पूरा ध्यान रखा जाये। सिक्ख सदैव नम्रता में रहें, नाम जपें, धर्म का प्रसार करें, गुरु के उपदेशों को ध्यान में रखें और गुरु के हुक्मों का सदैव पालन करते रहें। गुरु साहिब के ये हुक्म सिक्खों को भटकना से बचाने वाले, गुरबाणी की भावना दृढ़ कराने वाले थे।

तीन सौ सिक्खों के दल के साथ श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जब दिल्ली पहुंचे तो उनका योग्य स्वागत किया गया। जहांगीर से गुरु साहिब की अनेक अवसरों पर विस्तृत धर्म-चर्चायें हुईं। गुरु साहिब ने गुरबाणी की भावना के अनुरूप उसके सभी प्रश्नों का समाधान किया। जहांगीर के पास संदेह करने को कुछ भी नहीं बचा। जहांगीर को जब पता चला कि श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब शिकार-प्रेमी हैं, तो वह अनुरोध कर शिकार के लिये उन्हें अपने साथ ले गया। जंगल में शिकार खेलते हुए जहांगीर अकेला रह गया तो अचानक एक शेर सामने आ गया। उसे देख कर घोड़े और हाथी डर गये। ढोल वाले घबराहट में शोर मचाने लगे। जहांगीर ने जितने भी वार किये, शेर के आस-पास से निकल गये, निशाने पर नहीं लगे। जहांगीर ने शेर से अपनी जान बचाने के लिये गुरु साहिब को आवाज दी। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब घोड़ा दौड़ाते हुए तुरंत वहां पहुंचे और शेर तथा जहांगीर के मध्य आ खड़े हुए। शेर जैसे ही जहांगीर पर झपटने वाला था गुरु साहिब ने अपनी कृपाण के एक ही भरपूर वार से शेर के दो टुकड़े कर दिये। जहांगीर की जान बच गई।

कुछ समय बाद जहांगीर का आगरा जाने का कार्यक्रम बना तो उसने गुरु साहिब से भी साथ चलने का अनुरोध किया। यद्यपि गुरु साहिब ने जहांगीर की जान बचाई थी और उसके सारे आध्यात्मिक प्रश्नों का निदान किया था, फिर भी गुरु साहिब का आभामंडल और यश उसे अंदर ही अंदर खाए जा रहा था। इसी ईर्ष्या की आग में जले-भुने जहांगीर ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को

ग्वालियर के किले में भेज दिया।

जिनके मन में गुरु साहिब के प्रति वैर-भाव था वे गुरु साहिब को कैदी के रूप में देख कर प्रसन्न हो रहे थे। किन्तु, उन्हें क्या पता था कि ग्वालियर के किले में इतिहास का वह पृष्ठ लिखा जाने वाला है जिस पर पूरी मानवता को युगों-युगों तक गर्व का अनुभव होगा और मानवीय मूल्यों में विश्वास सुदृढ़ होता रहेगा।

ग्वालियर के किले में जैसे ही श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के आगमन का समाचार विदित हुआ, सर्वत्र प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। ऐतिहासिक स्रोत बताते हैं कि किले के बंदियों में अनेक ऐसे राजा भी थे जिन्हें सिंहासन से उतार कर जहांगीर ने उनके राज्यों को अपने अधीन कर लिया था। वे यातनायें और अपमान सहते-सहते शारीरिक रूप से निर्बल हो गये थे। वे गंदे-फ़टे वस्त्रों में जीवन व्यतीत कर रहे थे। उन पर बहुत-से छोटे- मोटे सरकारी नौकर हुक्म चलाते थे। सार यह कि कभी राज्यों के राजा रहे लोग अति दयनीय अवस्था में थे। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के किले में आने से उनके मन में आशा की किरणें फूटीं कि उनकी अवस्था बदल जायेगी। किले का अधिकारी (दारोगा) हरीदास भी प्रसन्न था। उसके मन में बहुत दिनों से आस बनी हुई थी की वह गुरु साहिब के दर्शन कर सके, किन्तु मिलने का सबब नहीं बन पा रहा था। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के किले में प्रवेश करते ही हरीदास स्वयं आगे आकर मिला और उनके चरणों में मस्तक झुका कर चरण-रज अपने मस्तक पर लगाई। गुरु साहिब के सामने प्रथम प्रश्न था कि बंदी राजाओं के लिए उत्तम भोजन और साफ़ वस्त्रों का प्रबंध कैसे हो? उनके रहने की व्यवस्था में सुधार कैसे हो? गुरु साहिब ने इसका आरम्भ स्वयं से किया। वे स्वयं अति अल्प भोजन करते और मिलने वाला राशन बंदी राजाओं में बांट दिया करते। बंदी राजाओं की दशा सुधरने लगी। वे गुरु साहिब के प्रवचन सुनते और आत्मिक रूप से भी उबरने लगे। उधर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के वापिस न आने से माता गंगा जी को चिंता होने लगी। उन्होंने बाबा बुड्ढा जी को ग्वालियर भेजा। गुरु साहिब के दर्शन कर बाबा बुड्ढा जी ने बताया कि आपके दर्शन न प्राप्त होने से सारी संगत व्याकुल हो रही है। गुरु साहिब ने बाबा बुड्ढा जी को धैर्य रखने का आदेश देकर वापिस भेज दिया और साथ में यह भी कहा कि वे शीघ्र ही वापिस आयेंगे।

जहांगीर के दरबार में भी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की ग्वालियर किले में बंदी को लेकर चर्चा होने लगी। गुरु-घर से शत्रुता रखने वाले लोग जहां प्रसन्न थे और गुरु साहिब का अहित चाहते थे, वहां वजीर खान, हरीदास तथा साँई मियां मीर जी जैसे लोग भी थे जो इस बंदी का विरोध करते थे। इन लोगों ने जहांगीर से मुलाकात कर गुरु

साहिब की रिहाई की मांग की। सवाल-जवाब के चले लंबे सिलसिले के बाद जहांगीर ने गुरु साहिब को रिहा करने की सहमति प्रदान कर दी। वजीर खान तथा हरीदास ने ग्वालियर के किले में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के साथ भेंट की और किले से उनकी रिहाई की खबर दी तो गुरु साहिब ने स्पष्ट कहा कि वे किले से तभी बाहर आयेंगे जब किले में बंद सभी राजा भी छोड़े जायेंगे। वजीर खान, हरीदास तथा साँई मियां मीर जी ने जाकर जब जहांगीर को बताया तो जहांगीर ने साफ मना कर दिया। दारोगा हरीदास ने बीच का एक रास्ता तैयार किया कि जो गुरु जी का दामन थाम कर बाहर आ जाए उसे रिहा कर दिया जाए। जहांगीर ने इस शर्त पर हां कर दी। हरीदास ने जाकर गुरु जी को बताया और सारा प्रबंध कर लेने की बातक कही। गुरु साहिब द्वारा बताए अनुसार हरिदास ने गुरु साहिब के लिए एक बड़ा चोला (चोगा) सिलवाया, जिसमें बावन कलियां थीं। किले से बाहर आने के समय गुरु साहिब ने वह चोला पहना। किले में कैद सभी बावन राजाओं ने गुरु साहिब के चोले की एक-एक कली पकड़ी और कैद से मुक्त हो बाहर आ गये। जिन राजाओं ने कभी अपनी मुक्ति के बारे में सोचा भी नहीं था, जो पूर्णत: अशक्त हो चुके थे, जिनकी पैरवी करने वाला कोई नहीं था, जो पल-पल मृत्यु के निकट बढ़ रहे थे, उनका तन और मन से स्वस्थ हो जाना और कैद से भी मुक्त हो जाना एक अकल्पनीय आश्चर्य था। ऐसा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ही कर सकते थे।

ऐसा महान उपकार कर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने धर्म के बल की श्रेष्ठता को प्रकट किया। धर्म के जिस बल को श्री गुरु नानक साहिब ने प्रकट किया था और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने धारण किया था, वह धर्म का बल खास तौर पर निर्बल का बल था, असहाय का सहायक था, वह किसी भी तरह का भेदभाव नहीं करता था। धर्म ने यह नहीं देखा कि राजाओं का धर्म क्या है, जाति क्या है, क्षेत्र क्या है, उनकी मुक्ति से क्या लाभ होने वाला है। गुरु साहिबान ने धर्म का जो स्वरूप सामने रखा वह सहज से प्रकाशित था। आज जो हो रहा है— किसी को अपने बल का, अपनी सत्ता का, किसी को अपनी धन-सम्पत्ति का और किसी को अपने धर्म-कर्म का अहंकार है, जो अन्य के लिये प्रताड़ना का कारण बन रहा है। धर्म के अभिमान का अर्थ अन्य धर्मों का अपमान, शोषण और ह्रास बनता जा रहा है।

वर्तमान समय में भारत में धर्मांधता का खतरा पैदा कर अन्य धर्मों को वश में कर लेने के हालात पैदा करने वालों को सिक्ख इतिहास पढ़ कर अपनी विचारधारा में तत्काल संशोधन करने की आवश्यकता है। धर्मांधता का शिकार लोगों को, धर्म के वास्तविक अर्थ जानने के लिए श्री गुरु

हरिगोबिंद साहिब का जीवन-वृत्त अवश्य पढ़ लेना चाहिए। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का धर्म सहज का धर्म था अन्यथा राजाओं की सहायता करने से पूर्व वे उनके सामने सिक्ख बनने की शर्त भी रख सकते थे, मगर उन्होंने ऐसा नहीं किया। आज संसार में धर्म को जिस तरह ज्वर, ताप बना दिया गया है, धर्म का सच्चा स्वरूप ओझल होता जा रहा है। संकीर्ण विचारधारा की बंदी हो गई मानवता का उद्धार करने के लिये बंदीछोड़ श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का जीवन प्रेरणाप्रद है। धर्म सिद्धांत नहीं, सैद्धांतिक आचरण है।

धरमु भूमि सतु बीजु करि ऐसी किरस कमावहु ॥
तां वापारी जाणीअहु लाहा लै जावहु ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४१८)

उपरोक्त वचन में श्री गुरु नानक देव जी ने धर्म की परिभाषा का सार निहित कर दिया है। धर्म एक भूमि की भांति है, जिसमें श्रेष्ठ आचरण के बीज बोने से ही धर्म फलीभूत होता है। अहंकार है, पाखंड है, वैर-विरोध है, कुटिलता है, तो धर्म नहीं अर्जित किया जा सकेगा।

ग्वालियर के किले से बाहर आने के बाद श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब श्री अमृतसर साहिब आए। नगरवासियों को गुरु साहिब के आने की सूचना पहले ही प्राप्त हो चुकी थी। पूरा शहर गुरु साहिब के स्वागत और दर्शन के लिए उमड़ पड़ा। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जब अकाल बुंगा (श्री अकाल तख़्त साहिब) पहुंचे तो बाबा बुड्ढा जी ने शुक्राने की अरदास की। रात्रि को श्री हरिमंदर साहिब और पूरा शहर प्रज्जवलित किये गए दीपों से जगमगा उठा। कहते हैं कि उस दिन दीपावली का दिन था। सिक्खों ने इस दिन को 'बंदीछोड़ दिवस' के रूप में मनाया। बंदीछोड़ दिवस पर सिक्ख संगत द्वारा जलाए जाते दीपक धर्मांधता से मुक्ति का आह्वान करते हैं, ताकि जीवन में सत्य व ज्ञान का आलोक हो सके।

तत्पश्चात् श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब धर्म प्रचार-प्रसार में व्यस्त हो गये। आपने अनेक प्रचार-दौरे किये। जहांगीर की मृत्यु के बाद जब शाहजहां दिल्ली के तख़्त पर बैठा तो स्थितियां विपरीत हो गईं। गुरु साहिब को शाहजहां की फ़ौज के विरुद्ध चार युद्ध लड़ने पड़े और चारों युद्धों में गुरु साहिब विजयी रहे। चौथे युद्ध में गुरु साहिब के सुपुत्र श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने भी भाग लिया था और अपनी वीरता के प्रदर्शन से सभी को आश्चर्यचकित कर दिया था। किसी भी युद्ध में वैरी फ़ौज दो-तीन दिन से अधिक नहीं टिक पायी थी। अंतिम युद्ध के बाद गुरु साहिब कीरतपुर साहिब चले आये और वहीं पर ज्योति-जोत समाये।

भक्त नामदेव जी का समतामूलक समाज का संकल्प

*–प्रो. डॉ. संजय जाधव**

महाराष्ट्र तथा पंजाब की भूमि हमेशा से ही विचारशीलता, विवेक और चेतना से भरपूर रही है। इसका मुख्य कारण यह है कि यहाँ इतिहास काल से ही सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन में अनेक आंदोलन तथा बदलाव होते आए हैं। इस कारण महाराष्ट्र तथा पंजाब को परिवर्तन और क्रांति की भूमि कहा जाता है। यहां के समता आधारित विचारों एवं आंदोलनों की इसमें बड़ी भूमिका रही है। इन्हीं समतावादी परंपराओं की एक महत्वपूर्ण कड़ी भक्त नामदेव जी हैं, जो दोनों प्रदेशों को भावनिक बंधन के साथ जोड़ते हैं। हिंदी साहित्य में जिस 'संत परंपरा' का विशेष महत्व है, उसके आद्य प्रवर्तक के रूप में भक्त नामदेव जी को सम्मान दिया जाता है। भक्त नामदेव जी का जीवन और उनकी बाणी एक-दूसरे के पूरक हैं। उनका लक्ष्य केवल ईश्वर की भक्ति नहीं था, बल्कि सामान्य लोगों में जागरूकता और सुधार लाना भी था। भक्त नामदेव जी का जीवन बताता है कि वे हमेशा रचनात्मक विचारों वाले थे और समाज के लिए समर्पित थे। वे ऐसे संत थे जिन्होंने महाराष्ट्र से बाहर जाकर भी उत्तर भारत, जैसे— पंजाब, राजस्थान, गुजरात में अपनी अमिट पहचान बनाई।

भक्त नामदेव जी के समय का भारतीय समाज विसंगतियों तथा विषमताओं से ग्रसित समाज था। भक्त नामदेव जी ने ऐसे समय में लोगों में आत्मविश्वास और जागरूकता पैदा की। उनका मुख्य उद्देश्य था— समाज में से छुआछूत, भेदभाव और अंधविश्वास को दूर करना, समाज में समता, स्वतंत्रता, भाईचारा एवं न्याय की भावना लाना। भक्त नामदेव जी ने अपना समग्र जीवन इन्हीं मूल्यों की प्रतिष्ठापना में लगा दिया। भक्त नामदेव जी भारतीय संत परंपरा के आरंभिक और प्रभावशाली संत माने जाते हैं। उन्होंने केवल भक्ति नहीं की, बल्कि समाज में फैली असमानता, अंधविश्वास और संकीर्ण विचारधारा को दूर करने का कार्य भी किया। भक्त नामदेव जी समाज-सुधार और समता के महान संदेशवाहक थे, जिन्होंने अपना जीवन मानवता की सेवा में समर्पित किया।

समतामूलक समाज से तात्पर्य

समतामूलक समाज से तात्पर्य एक ऐसे आदर्श

**हिन्दी विभाग, श्री शिवाजी महाविद्यालय, परभणी (महाराष्ट्र), E-Mail.- drssjhindi@gmail.com*

समाज से है जिसका मूलाधार समता हो अर्थात् ऐसा समाज जिसकी बुनियाद समता पर आधारित हो। समतामूलक समाज के मूल में सबके साथ बराबरी का भाव और व्यवहार, सबको समान अवसर, सबको उन्नति एवं प्रगति करने का समान अवसर प्राप्त हो। 'समतामूलक समाज' से आशय है— ऐसा समाज, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के प्रति समभाव हो, जो हर व्यक्ति के प्राकृतिक एवं संवैधानिक अधिकारों की पूर्णतया रक्षा का विश्वास दिलाता हो तथा प्रत्येक व्यक्ति को समाज में यथोचित सम्मान पाने के सभी अवसर समान रूप से उपलब्ध कराता हो। हम देखते हैं कि भारतीय समाज जाति प्रधान समाज भी रहा है तथा है भी। जाति-व्यवस्था वास्तव में विषमता की जननी है। जाति-व्यवस्था ऊँच-नीच की भावना पर आधारित रही है। यह समतामूलक समाज की स्थापना के मार्ग में व्यवधान उत्पन्न करती है।" (भारत में राजनीतिक प्रक्रिया, डॉ. जोहरी तथा अन्य, पृष्ठ १०४) समतामूलक समाज के निर्माण में जाति भेदभाव का उच्छेद अति महत्वपूर्ण है। समतामूलक समाज में समाज के सभी व्यक्तियों को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में श्रेष्ठता सिद्ध करने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध रहेंगे तो जीवन में सकारात्मकता आएगी, परस्पर प्रतिस्पर्द्धा भी स्वस्थ होगी और उत्साहजनक परिणाम मिलेंगे, समाज प्रगतिशील तथा राष्ट्र समुन्नत बनेगा, नए-नए विचारों का जन्म होगा, ज्ञान-विज्ञान का स्तर ऊंचा होगा, मानवीय जीवन सुखदायक होगा।

ज्ञान मानव जीवन के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह हमें समझने, सीखने, विकास करने और समस्याओं का समाधान करने की क्षमता प्रदान करता है। ज्ञान व्यक्ति को जीवन में सफलता की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है। यह हमें नए और समृद्ध दृष्टिकोण प्रदान करता है, जिससे समस्याओं के समाधान के लिए नये तरीके खोजे जा सकते हैं। ज्ञान हमें स्वतंत्रता का अनुभव करने की क्षमता प्रदान करता है। यह हमें विचारों और धारणाओं को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने की शक्ति देता है। ज्ञान से हमारी क्षमता बढ़ती है और हमें अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने में मदद मिलती है। ज्ञान का सही उपयोग— समाज में परिवर्तन और सुधार का माध्यम बन सकता है। यह हमें समस्याओं को समझने और समाधान के लिए नए तरीके ढूंढने में मदद करता है। ज्ञान से हमारी सोच और विचार-शक्ति बढ़ती है, जिससे हमारी मानसिक स्थिति में सुधार होता है। ज्ञान ही हमें समाज में सहायता, उन्नति और समृद्धि की दिशा में अग्रसर करता है। यह हमारे जीवन में व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर सशक्तता एवं स्वतंत्रता प्रदान करता है। ऐसा नहीं है कि भारतीय समाज में ज्ञान की परंपरा नहीं है, यहां पर ज्ञान की एक सुदीर्घ परंपरा रही है। परंतु, प्रतिक्रांतिवादियों ने

इस ज्ञान परंपरा को खंडित कर समाज को अज्ञान, अंधविश्वास तथा कर्मकांडों की खाई में धकेलने का प्रयास बार-बार किया है।

भक्त नामदेव जी का समतामूलक समाज बनाने का संकल्प : भक्त नामदेव जी के समग्र उपक्रमों का प्रमुख उद्देश्य समाज को समतामूलक विचारधारा की बुनियाद पर खड़ा करना था, समाज को अज्ञान के अंधकार से निकाल कर प्रज्ञा-प्रकाश की ओर अग्रसर करना था। भक्त नामदेव जी के समग्र जीवन-उपक्रमों का सूक्ष्म अवलोकन तथा आंकलन करने पर स्पष्ट होता है कि ज्ञानमूलक समाज का निर्माण करना ही उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य था। वे अपने परिवेश के प्रति अत्यंत सजग थे। उनकी पुरोगामी चेतना का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वे समस्त मानव समस्याओं का मुख्य कारण अज्ञान को मानते हैं। मानव जीवन को विशिष्ट अर्थ प्रदान करने तथा जीवन को सार्थक बनाने हेतु भक्त नामदेव जी प्रत्येक व्यक्ति के मन को प्रेरित करते हैं। उनकी दृष्टि में मानव जीवन की सार्थकता 'स्व' की पहचान में ही है :

काएं रे मन बिखिआ बन जाइ ॥
भूलौ रे ठगमूरी खाइ ॥१ ॥रहाउ ॥
जैसे मीनु पानी मही रहै ॥
काल जाल की सुधि नही लहै ॥. . .
कहत नामदेउ ता ची आणि ॥
निरभै होइ भजीऐ भगवान ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२५२)

भक्त नामदेव जी की दृष्टि में सुसंस्कृत समाज से तात्पर्य ऐसा समाज, जिसमें अज्ञान-अंधविश्वास का अभाव हो, जो वैज्ञानिक चेतना से संपृक्त हो तथा उस समाज के प्रत्येक व्यक्ति के अंतस में ज्ञानोदय हुआ हो।

भक्त नामदेव जी के काल के समाज का रूढ़ि परंपराप्रिय होने का मुख्य कारण अज्ञान ही था। उस समय शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार नहीं हुआ था। विडंबन की बात है कि उस समय समाज का उच्च वर्ण ही शिक्षा ग्रहण कर सकता था। बहुजन समाज में शिक्षा का उतना प्रचलन नहीं था। गाँव में जो पाठशाला होती थी उसमें परंपरागत विषयों का ही अध्ययन-अध्यापन होता था, जिसमें मुख्य रूप से वेदों का अध्ययन होता था। तत्कालीन महाराष्ट्र अन्य राज्यों की तुलना में शैक्षिक दृष्टि से पीछे था।

भक्त नामदेव जी अपनी तरफ से अज्ञान के अंधकार को ज्ञान के प्रकाश द्वारा दूर करने का प्रयास करते हैं। वे समाज में बुद्धिवादी तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रचार-प्रसार कर रहे थे। लोक-चेतना का परिष्कार करते हुए भक्त नामदेव जी समाज के वैचारिक स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास अपने कार्य-कर्त्तत्व के द्वारा करते हैं। ज्ञान की व्यापक अवधारणा से परिचित भक्त नामदेव

जी सामान्य व्यक्ति को सचेत करते हुए कहते हैं कि ज्ञान के अभाव में किसी भी व्यक्ति का उत्कर्ष एवं विकास नहीं हो सकता। अज्ञान के मजबूत दरवाजों को खोलने की क्षमता केवल ज्ञान में है :

सफल जनमु मो कउ गुर कीना॥
दुख बिसारि सुख अंतरि लीना॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८५७)

ज्ञानार्जन की क्रिया निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति का अनुभव तथा उन अनुभवों का सार्थक विवेचन-विश्लेषण व्यक्ति के चिंतन को और अधिक सूक्ष्म तथा व्यापक बनाता है। इससे व्यक्ति की दृष्टि तथा दृष्टिकोण का व्यापक विस्तार होता है। इसके विपरीत अज्ञान दृष्टि और सोच की संकीर्णता है। अज्ञान अनेक अंधविश्वासों को जन्म देता है। भक्त नामदेव जी अपनी ऋजु (सरल, सच्ची) बाणी द्वारा समाज में व्याप्त अंधविश्वासों तथा (कालबाह्य) रूढ़ियों का खंडन करते हैं तथा इसके विरोध में लोगों का उद्बोधन करते हैं। इसी उद्बोधन-कार्य से उनका ज्ञानमूलक समाज-निर्माण का संकल्प स्पष्ट हो जाता है। भक्त नामदेव जी अपने सूक्ष्म अवलोकन का यही निष्कर्ष निकालते हैं कि अज्ञान व्यक्ति-समाज में कुविचारों को जन्म देता है और कुविचारों से व्यष्टि के साथ-साथ समष्टि का भी अहित होता है। इससे छुटकारा पाने के लिए भक्त नामदेव जी दृष्टि-संपन्न, विवेक-संपन्न गुरु के मार्गदर्शन की आवश्यकता पर बल देते हैं। चेतना-संपन्न गुरु अपने शिष्य को समग्रता से देखने की दृष्टि प्रदान करता है :

गिआन अंजनु मो कउ गुरि दीना॥
राम नाम बिनु जीवनु मन हीना॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८५८)

भक्त नामदेव जी कहते हैं कि ज्ञान का अंजन प्रज्ञाचक्षुओं को दिव्य दृष्टि प्रदान करता है। भक्त नामदेव जी यह देखकर अत्यंत हैरान होते हैं कि समाज में धर्म के नाम पर अधर्म का प्राबल्य है, सुख के अर्थ और संदर्भ अत्यंत संकीर्ण हो गये हैं, समाज में से परस्पर विश्वास और अपनत्व लगभग विलुप्त हो गया है, त्याग के स्थान पर भोग और व्यवहार के नाम पर ठगाई का बोलबाला है। भक्त नामदेव जी का समस्त चिंतन इसी लोक-चिंता की उपज है। अपनी समस्त रचनात्मक ऊर्जा और समस्त कौशल का परिचय देते हुए वे लोक-मानस में वैचारिकता एवं बौद्धिकता का महत्व अधोरेखित करते हैं। मानवीय जीवन की सार्थकता मस्तिष्क की चरम प्रयुक्ति में है। प्रकृति में मनुष्य अन्य जीवों से भिन्न प्राणी माना जाता है। प्राकृतिक घटनाओं का तार्किक विवेचन-विश्लेषण करने की क्षमता तथा उसकी नवोन्मेषी प्रतिभा ही मनुष्य की प्रमुख विशेषता मानी जाती है। दूसरे शब्दों में, मनुष्य की पहचान उसकी प्रखर बुद्धि से होती है।

भक्त नामदेव जी मानव को सच्चे अर्थों में मानव के रूप में ही देखना चाहते थे। वे जानते थे

कि बुद्धिवादी समाज-निर्माण से अनेक भावनिक प्रश्न अपने आप विसर्जित होंगे। बुद्धिवादी समाज का प्रत्येक व्यक्ति प्रज्ञा से युक्त होगा, जो न किसी का शोषण करेगा और न ही किसी के शोषण का शिकार होगा, इसीलिए वे अपने लोकप्रबोधनात्मक संबोधन में समाज को अविद्या से छुटकारा पाने का आवाहन करते हैं। भक्त नामदेव जी के जीवन-उपक्रमों का अंतिम उद्देश्य समाज में व्याप्त अज्ञान रूपी अंधकार को नष्ट कर ज्ञानदीप को प्रज्वलित करना ही रहा है :

जैसी भूखे प्रीति अनाज ॥
त्रिखावंत जल सेती काज ॥
जैसी मूड़ कुटंब पराइण ॥
ऐसी नामे प्रीति नराइण ॥१ ॥
नामे प्रीति नाराइण लागी ॥
सहज सुभाइ भइओ बैरागी ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११६४)

भक्त नामदेव जी ने देखा कि अविद्या अर्थात् अज्ञान के कारण ही मनुष्य के मन में संकीर्ण तथा स्वार्थी मनोवृत्ति का अविर्भाव होता है। उनके मतानुसार अज्ञान ही मनुष्य के समस्त दोषों का एकमात्र कारण है। भक्त नामदेव जी ने असल रोग की जड़ को पहचाना था, इसीलिए उसका उपाय भी बताते हैं। उनकी धारणा थी कि ज्ञान के प्रचार और प्रसार से ही समाज में व्यापक सुपरिवर्तन संभव है। ज्ञानोदय से ही मनुष्य और समाज की मानसिकता तथा वृत्तियों में परिवर्तन लाया जा सकता है। मनोविकार को सुविचारों में परिवर्तित करने का सामर्थ्य केवल ज्ञान में होता है। भक्त नामदेव जी ज्ञान की महत्ता को भलीभाँति जानते थे। उनके उद्बोधन-प्रबोधन का उद्देश्य प्रज्ञावान व्यक्तित्व-निर्माण के साथ-साथ ज्ञानमूलक समाज का निर्माण करना था।

भक्त नामदेव जी के समग्र जीवन-कार्य का उद्देश्य विषमता का खंडन तथा समता का मंडन करना रहा है।

भक्त नामदेव जी का वर्ण-व्यवस्था के प्रति आक्रोश उनके चेतना-संपृक्त व्यक्तित्व का परिचायक है। भक्त नामदेव जी की भाषा में वह आक्रोश और कर्कशता नहीं है जो अक्सर विद्रोही व्यक्तित्व में पाई जाती है। विनम्रता उनके जीवन का आभूषण है। भक्त नामदेव जी अत्यंत सचेत रह कर तथा सावधानी से अपने लक्ष्य को पाने के लिए कृतसंकल्प दिखाई देते हैं। संयम तथा शांति से संपन्न कार्य ही चिरस्थायी होता है। यह उक्ति भक्त नामदेव जी की समस्त कार्य-शैली पर शब्दश: सार्थक लगती है। सिद्धांत और व्यवहार का सुंदर समन्वय भक्त नामदेव जी के चरित्र की मौलिक विशेषता है।

भक्त नामदेव जी का समाज-निरीक्षण अत्यंत सूक्ष्म था। वे तत्कालीन ब्राह्मण पुरोहितों का वास्तविक रूप जनसामान्य के समक्ष प्रस्तुत करते

हैं। उन्होंने देखा कि ब्राह्मण पुरोहित यज्ञादि कर्म के द्वारा जनमानस पर अपने श्रेष्ठत्व का आतंक निर्माण करते हैं। तत्कालीन समाज में ब्राह्मण का स्थान अत्यंत श्रेष्ठ था। अध्ययन, अध्यापन, यजन, याजन, दान तथा प्रतिग्रह इन षट्कर्मों का नित्य निर्वाह ही ब्राह्मण पुरोहितों का दैनिक कार्य था। भक्त नामदेव जी ने देखा कि कर्मकांडों को प्रोत्साहन देने वाला ब्राह्मण पुरोहित सामान्य व्यक्ति का आर्थिक, धार्मिक तथा भावनात्मक शोषण कर रहा है।

भक्त नामदेव जी जाति-वर्ण-व्यवस्था के मूल पर ही प्रहार करते दिखाई देते हैं। सुसभ्य समाज का पहला लक्षण है— सार्वत्रिक समता और सबको समान अवसर। भक्त नामदेव जी ने देखा कि तत्कालीन भारतीय समाज सुसभ्य समाज की परिभाषा से कोसों दूर है। व्यक्ति का मूल्यांकन उसके गुण की अपेक्षा जन्म-जाति के आधार पर करने की विषम व्यवस्था को भक्त नामदेव जी बदलना चाहते हैं।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि भक्त नामदेव जी, जिन्हें आम तौर पर 'संत नामदेव जी' नाम से भी जाना जाता है, एक महान भक्त, बाणीकार, मानवता के प्रचारक, पाखंड तथा धार्मिक मिथ्याचारों के प्रखर विरोधी थे। वे भगवत्-भक्ति, समता और सामाजिक जागरूकता के पक्षधर थे। यद्यपि उनका जन्म महाराष्ट्र में हुआ, किंतु उनके विचार और भक्ति-परंपरा ने उत्तर भारत में विशेष रूप से सिक्ख धर्म पर गहरा प्रभाव डाला। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त नामदेव जी के भक्ति-पदों (बाणी) का समावेश इस प्रभाव की पुष्टि करता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब, जो सिक्ख धर्म का सर्वोच्च ग्रंथ है, उसमें भक्त नामदेव जी के ६१ भजन (सबद) संकलित हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि श्री गुरु नानक देव जी और उनके उत्तराधिकारी गुरुओं ने भक्त नामदेव जी की भक्ति, समता और सामाजिक चेतना को विशेष महत्व दिया। भक्त नामदेव जी ने जाति-भेद, मूर्ति-पूजा और कर्मकांड का विरोध किया। उन्होंने एक निराकार परमात्मा की उपासना पर ज़ोर दिया। यह विचार महान सिक्ख धर्म के सिद्धांतों से मेल खाता है। भक्त नामदेव जी ने कहा कि ईश्वर सबमें है और उसे पाना किसी जाति या वर्ग से नहीं, सच्चे भक्ति-भाव से संभव होता है। उनकी भाषा सरल, भावपूर्ण और लोक-शैली में है, जो सिक्ख भक्ति-परंपरा के अनुरूप है। भक्त नामदेव जी सिक्ख धर्म का संबंध गहरा और आदरपूर्ण है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उनके पदों (बाणी) का स्थान, उनके प्रति सिक्ख धर्म की श्रद्धा और स्वीकृति का स्पष्ट प्रमाण है।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर के जन्म-स्थान की खोज

*–डॉ. परमवीर सिंघ**

बाबा बंदा सिंघ बहादुर को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने नांदेड़ से पंजाब भेजा था। उस दिन से लेकर दिल्ली में शहादत होने तक, बाबा जी की समस्त जीवन-घटनाएँ इतिहास में दर्ज हैं। सिक्ख और फ़ारसी विद्वानों के अलावा बादशाही रिकार्ड भी बाबा बंदा सिंघ बहादुर के जीवन की घटनाओं से सम्बन्धित बहुत ही महत्वपूर्ण और क्रमवार जानकारी प्रदान करते हैं। इसके साथ ही बाबा जी द्वारा जारी किये गए हुकमनामे उनकी जीवन-घटनाओं के विवरण प्रदान करते हैं। इन सभी स्रोतों के आधार पर विद्वानों ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर से सम्बन्धित पैदा हुए बहुत-से भ्रम दूर करने का सफल यत्न किया है।

नांदेड़ में सिंघ सजने से पूर्व बाबा बंदा सिंघ बहादुर की जीवन-घटनाओं से सम्बन्धित कोई पुख़्ता जानकारी प्राप्त नहीं होती। जो विवरण प्राप्त होते हैं उनमें बाबा जी को एक वैरागी के रूप में पेश किया गया है, जो कि एक हिरनी के शिकार से इतना उदास हुए कि सब कुछ छोड़ कर साधु बन गए। साधुओं के दल के साथ मिल कर ये कसूर में श्री गुरु नानक देव जी के मौसेरे भाई बाबा राम थंमन जी के डेरे में पहुँचे और वैरागी जीवन धारण कर लिया। अंतत: वर्तमान नांदेड़ नामक स्थान पर जाकर तप करने लगे। तप करते-करते इन्होंने ऐसी ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त कर ली कि दूर बैठे किसी का भी नुकसान करने में निपुण हो गए। इनकी एक शक्ति का वर्णन कई स्रोतों में पढ़ने को मिलता है कि जो भी इनके पलंग पर आकर बैठ जाता, वे उस पलंग को पलट देते थे।

ऋद्धि-सिद्धि की प्राप्ति के अतिरिक्त इनके जीवन के साथ एक अन्य तथ्य बहुत ही प्रभावशाली तरीके के साथ जोड़ा जाता है कि इन्हें पहाड़ी मार्गों की जितनी समझ थी, उतनी बादशाही जासूसों को भी नहीं थी। बादशाही रिकार्ड में लोहगढ़ आदि स्थानों से इनके बच निकलने की घटनाएँ दर्ज हैं, जो कि साधारण वैरागी साधुओं की समझ से कहीं ज़्यादा हैं। कहा जाता है कि उस समय वैरागी साधु समूचे देश में घूमते रहते थे और वे कठिन मार्गों के अलावा आम लोगों द्वारा बोली जाती भाषाओं की जानकारी भी रखते थे। बाबा बंदा सिंघ बहादुर जिस प्रकार शाही फौज के घेरे में से कई बार बच निकलने में सफल होते रहे हैं, यह उनकी पहाड़ी रास्तों की जानकारी और उन रास्तों में से बाधारहित बच निकलने का प्रशिक्षण, कुछ एक दिनों में ही प्राप्त नहीं हो जाता। लम्बे समय से पहाड़ों पर जीवन बसर करने वाले लोग, मैदानी इलाकों वाले लोगों से पहले निश्चित गंतव्य पर पहुँच जाते हैं।

* *प्रमुख, सिक्ख विश्वकोष विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला- १४७००२, फोन : ९८७२०-७४३२२*

बाबा बंदा सिंघ बहादुर का पहाड़ों के संग लगाव उनकी युद्ध-नीति का हिस्सा था या यूं कहें कि पहाड़ों के संग उनका प्रेम उन्हें इन इलाकों की तरफ खींच कर ले जाता था, यह अविष्कार का विषय है। बाबा जी के बाद अति संकट के समय में पराक्रमी सिक्ख मालवा क्षेत्र के जंगलों और राजस्थान के बुड्ढा जौहड़ नामक इलाके में जीवन बसर करते रहे हैं। बीकानेर के राजा के पास बहुत-से सिक्खों के नौकरी करने के हवाले भी इतिहास के ग्रंथों का हिस्सा हैं।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर लगभग दो वर्ष तक जम्मू से आगे रिआसी की पहाड़ियों में चनाब दरिया के तट पर जीवन बसर करते रहे और इसी समय के दौरान ही इन्होंने चंबा की राजकुमारी के साथ विवाह करवाया था। रिआसी के निकट जिस स्थान पर बाबा जी लम्बा समय रहे वहां पर अब भी इनके वंशज मौजूद हैं। बाबा बंदा सिंघ बहादुर का पहाड़ों के प्रति लगाव और जानकारी उनकी विरासत में विद्यमान है। जम्मू से पुंछ जाते समय राजौरी नामक नगर में बाबा जी का जन्म हुआ माना जाता है। सरदार करम सिंघ हिस्टोरियन, डॉ. गंडा सिंघ, ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल, सरदार सोहन सिंघ आदि सिक्ख इतिहासकार राजौरी में बाबा जी का जन्म हुआ तो मानते हैं, लेकिन राजौरी में बाबा जी का जन्म किस स्थान पर हुआ, इस बारे में सभी इतिहासकार चुप हैं। बाबा बंदा सिंघ बहादुर के परिवार में से माता जोगिंदर कौर द्वारा 'संक्षिप्त जीवन बाबा बंदा सिंघ बहादुर' शीर्षकाधीन जो वृतांत सामने आया है, उसमें वे बताते हैं कि राजौरी के एक गाँव 'जोरो का गढ़' में बाबा जी का जन्म हुआ। राजौरी में जाकर जब इस संबंध में जानकारी प्राप्त करने का यत्न किया गया तो पता चला कि इस नाम का कोई गाँव इलाके में मौजूद नहीं है। माता जी ने अपनी जानकारी का कोई हवाला नहीं दिया, परन्तु वे लम्बा समय इस इलाके में रहे हैं और उन्होंने इस स्थान का वर्णन किया है। पुरातन इतिहास की जानकारी प्राप्त करते हुए पता चलता है कि कुछ ऐसे नगर पुरातन लिखतों में मौजूद हैं, लेकिन अब उनके नाम बदल गए हैं, जैसे वर्तमान 'बैजनाथ' का प्राचीन नाम 'कीड़ाग्राम' था। श्री गुरु नानक देव जी की जन्म-साखियों में 'कीड़ाग्राम' का ही वर्णन मिलता है। जो इस गाँव के प्राचीन नाम से वाकिफ़ नहीं हैं, वे इतिहास की सही जानकारी प्रदान नहीं कर सकते। यदि माता जोगिंदर कौर 'जोरो का गढ़' के निकटवर्ती इलाके की जानकारी भी दे देते तो इतिहासकारों को इस स्थान की निशानदेही करने में आसानी हो जाती।

राजौरी में बाबा बंदा सिंघ बहादुर का जन्म-स्थान निर्धारित करने के लिए कई प्रकार के भ्रम पैदा किये जा रहे हैं। रिआसी से पुंछ जाते समय राजौरी में राजौरी-पुंछ मुख्य मार्ग पर राजौरी के बस स्टैंड से लगभग ५०० मीटर दूर एक बोर्ड लगा नज़र आया, जिस पर 'गुरुद्वारा जन्म-स्थान बाबा बंदा सिंघ बहादुर, राजौरी' लिखा हुआ था। बोर्ड के आकर्षण ने रुकने के लिए मजबूर किया तो देखा कि लगभग दो सौ गज़ के एक खाली प्लाट* में एक निशान साहिब है और उसके निकट यह बोर्ड लगा हुआ था। कोई पुरातन निशानी आदि

मौजूद न होने के कारण ऐसा लगता था कि इस नगर में बाबा जी के जन्म से सम्बन्धित हवाले मिलते हैं, जिसे साकार रूप प्रदान करने के लिए यहाँ पर बोर्ड और निशान साहिब लगा दिए गए हैं। मन में बार-बार उस स्थान के बारे में जानकारी प्राप्त करने की इच्छा पैदा हो रही थी, जहाँ पर बाबा जी का जन्म हुआ था। डॉ. गंडा सिंघ जैसे दानिशवर इतिहासकार इस इलाके में आकर इस स्थान की जानकारी प्राप्त करने का यत्न करते रहे हैं परन्तु उन्हें कोई पुख़्ता जानकारी हासिल नहीं हुई थी। सभी इतिहासकार इस बात पर तो सहमत हैं कि बाबा जी का जन्म राजौरी में हुआ था परन्तु उस स्थान को ढूँढने में कोई सफलता प्राप्त नहीं कर सका। स्थानीय सिक्ख भी इस स्थान से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करने का यत्न करते रहे हैं परन्तु कुछ हाथ नहीं लगा।

इस स्थान के प्रति जानने की इच्छा के कारण राजौरी के स. राजविंदर सिंघ के साथ संपर्क स्थापित हुआ जो कि 'बाबा बंदा सिंघ बहादुर सिक्ख यूथ आर्गेनाइजेशन' के प्रधान हैं। राजौरी निवासी इस नौजवान ने अपने जीवन का बेहतरीन समय बाबा जी के जन्म-स्थान की खोज में लगाया है। अपनी खोज के आधार पर इसने सरकार के पास पहुँच की और बहुत-से सम्बन्धित दस्तावेज़ अधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत किये। गत लगभग १०-१२ वर्ष से यह नौजवान सरकारी अधिकारियों तक पहुँच कर बाबा जी के जन्म-स्थान को सरकारी रिकार्ड में दर्ज करवाने के लिए यत्नशील है।

इसके द्वारा पेश किये गए दस्तावेज़ तहसीलदार के पास गए, तो पड़ताल की एक लम्बी प्रक्रिया आरंभ हुई। अंत में पटवारी ने पुरातन रिकार्ड खंगाल कर जो रिपोर्ट तैयार कर तहसीलदार को भेजी वह आगे राजौरी के डिप्टी कमिशनर जनाब मुहम्मद अशरफ के समक्ष पेश की गई। समूची पड़ताल का विश्लेषण करने के पश्चात् डिप्टी कमिशनर ने दिनांक १२.०६.२०२० को खसरा नंबर २८१, २८१/ १ और २८२ की ६६ कनाल ८ मरला ज़मीन बाबा बंदा सिंघ बहादुर के नाम दर्ज करने का आदेश जारी कर दिया। गुरदनपाईन गाँव के पटवार-क्षेत्र फतेहपुर, तहसील व ज़िला राजौरी में नामखेत डड्डां वाली बाउली की यह ज़मीन राजौरी बस स्टैंड से लगभग २ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जिसकी जमाबंदी अब बाबा जी के नाम बोलती है।

सरकारी रिकार्ड के आधार पर जो ज़मीन बाबा बंदा सिंघ बहादुर के नाम लगाई गई है वह बाबा जी के जन्म-स्थान से सम्बन्धित जानकारी प्रदान करने वाला महत्वपूर्ण स्रोत बन गया है। वर्तमान समय में यह ज़मीन फ़ौज के अधिकार-क्षेत्र में है और उनके अधिकार-क्षेत्र में बाबा जी की यादगार स्थापित करना कोई आसान कार्य नहीं, बल्कि एक लम्बी प्रक्रिया का हिस्सा है। यदि पंथक रूप में यत्न किया जाए तो इस ऐतिहासिक कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया जा सकता है।

सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया

*–डॉ. मनजीत कौर**

सिक्ख इतिहास में एक नारी का जिक्र आता है। नाम था— माता जीवन कौर, जिसका विवाह गांव आहलू, जिला लाहौर में सरदार बदर सिंघ कलाल के साथ हुआ था। पूर्ण धार्मिक प्रवृत्ति वाली माता जीवन कौर ससुराल एवं मायके दोनों पक्ष से खुशहाल थी और अपने माता-पिता से गुरसिक्खी की बख्शिशों से झोली भरवा कर लाई थी। ईश्वरीय कृपा से इसका कंठ भी सुरीला था। श्रद्धा-भावना से गुरबाणी पढ़ती। गुरबाणी गायन इतनी आत्मीयता से करती कि श्रोता भावविभोर हो उठते। वह दोतारा वाद्य-यंत्र बजाकर कीर्तन करती। इस माता ने १७१८ ई. में एक लाल को जन्म दिया, जिसका नाम रखा गया— 'जस्सा सिंघ'। इस बालक के सिर से इसके पिता का साया बहुत छोटी उम्र में ही उठ गया था। माता जीवन कौर सिक्ख संगत के साथ अपने पुत्र को लेकर दिल्ली में माता सुंदरी जी के सान्निध्य में रहने लगी। वहाँ भी जीवन कौर दोतारा वाद्य-यंत्र बजा कर अपने मधुर कंठ से बड़ी तन्मयता से कीर्तन करती। माता सुंदरी जी की शरण में जाकर स. जस्सा सिंघ को भी कीर्तन करने का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। माता सुंदरी जी के संरक्षण में सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को गुरमति का ज्ञान, विविध भाषाओं का बोध तथा सिक्ख विचारधारा का बहुपक्षीय ज्ञान प्राप्त हुआ। साथ ही सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया का अहोभाग्य बना कि धनुष-बाण, कृपाण आदि की बख्शिश माता सुंदरी जी द्वारा उन्हें प्राप्त हुई।

ऊपर वाले की अपार अनुकम्पा थी सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया पर, जिस माँ ने जन्म दिया उसके रोम-रोम में गुरबाणी का वास था। फिर माता सुंदरी जी की शरण मिली, शिक्षा-दीक्षा मिली और शस्त्रों की बख्शिश हुई। यहीं पर बस नहीं, फिर सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया का अपनी माता और मामा बाघ सिंघ के साथ नवाब कपूर सिंघ के पास पहुंच जाना होता है। नवाब कपूर सिंघ सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के व्यक्तित्व से बड़े प्रभावित हुए और उनकी माता से आग्रह किया कि इस बालक को उनके पास ही छोड़ दिया जाए। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया की खुशकिस्मती थी कि इनकी माता ने सहर्ष अपने इकलौते सुपुत्र को नवाब कपूर सिंघ के सुपुर्द

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

कर दिया।

अब सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया की शिक्षा-दीक्षा नवाब कपूर सिंघ की देख-रेख में होने लगी। उन्हें घुड़सवारी, तीरंदाजी, नेजाबाजी, तेग चलाने की कला के प्रशिक्षण के साथ-साथ सेवा और सुमिरन के गुणों से सुसज्जित किया गया। श्रद्धा-भावना से संगत की सेवा करते हुए सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया का जीवन व्यतीत हो रहा था। इसी दौरान नवाब कपूर सिंघ द्वारा इन्हें अमृत-पान करवाया गया तथा रहित मर्यादा में परिपक्व किया गया। इसके साथ ही नवाब कपूर सिंघ की तरफ से इन्हें एक विशेष सेवा सौंपी गई, जिसके परिणामस्वरूप सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के जीवन में एक क्रांतिकारी मोड़ आया। वो सेवा थी— खालसा फौज के घोड़ों को दाना खिलाने अर्थात् खुराक उपलब्ध कराने की सेवा। इस सेवा को पूरी लगन और समर्पित-भाव से सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया निभाते रहे।

जब अहमद शाह अब्दाली मराठों पर विजय पाकर लाहौर लौटा और लाहौर आकर तख़्त पर बैठा तो सभी चौधरियों, सरदारों, अमीरों आदि को उपस्थित होने के लिए हुक्म किया। कसूर के मीर मुहम्मद को इसलिए कैद कर लिया कि उसने सिंघों को धन दिया था। उस समय अहमद शाह अब्दाली बीस-बाईस हजार हिंदू पुरुष, औरतें, बच्चे, बुजुर्ग, लड़कियां, लड़के पकड़ कर उन्हें बैलगाड़ियों पर बांध कर लिए जा रहा था। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने अन्य सिक्ख सरदारों को साथ लेकर गोइंदवाल साहिब के निकट ब्यास दरिया पार करते समय उस पर जा हमला किया और कैदियों के बंधन काट दिए। उनको उनके घर भेज दिया। अहमद शाह अब्दाली लहू के घूंट भरता हुआ चला गया।

'शमशेर खालसा' कृत ज्ञानी गिआन सिंघ के अनुसार, "सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया और सरदार चढ़त सिंघ ने चार हजार शूरवीर लेकर तीन बार अहमद शाह के विरोध स्वरूप दुर्रानियों की सेना से टक्कर ली। वे दो बार अहमद शाह तक न पहुंच सके, परंतु तीसरी बार अहमद शाह के निकट जाकर सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने गर्ज कर कहा, "ऐ अहमद शाह! अगर तू मर्द है, तो जिस तरह लड़ना चाहे आ लड़ ले! मेरा-तेरा दोनों का जंग हो और लोग देखें!" सिंघ ने बहुत ललकारा, मगर अब्दाली की हिम्मत न हुई और वह टल गया।" (पृष्ठ २९८)

परिणामस्वरूप अहमद शाह अब्दाली का सिक्का चलना बंद हो गया और नकोदर सराय, श्री अमृतसर साहिब, लाहौर, सियालकोट, गुजरात आदि शहरों के साथ-साथ पंजाब के समस्त इलाकों में सरदार जस्सा सिंघ

आहलूवालिया द्वारा चलाया सिक्का प्रचलित हो गया।

विचारणीय तथ्य यह है कि यह वो समय था जब मुगल पठान फौज अजेय मानी जाने लगी थी, जिस पर विजय पाने की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। भारतीयों के दिलों में दहशत इस कद्र घर कर चुकी थी कि वे हमलावरों की गुलामी स्वीकार कर चुके थे। ऐसे खौफनाक समय तथा विषम परिस्थितियों में सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, सरदार हरी सिंघ भंगी, सरदार चढ़त सिंघ शुकरचक्किया जैसे महान शूरवीर सरदारों ने विदेशी अत्याचारी आक्रमणकारियों के अत्याचारों के साथ-साथ जालिमों का यह भ्रम तोड़ा कि शायद सदा उनका ही शासन रहेगा।

सिक्ख देशभक्त, स्वतन्त्रता सेनानी की महान भूमिका अदा करते हुए देश के मुक्ति-प्रदाता बने। अहमद शाह अब्दाली के चंगुल से हिंदोस्तान की स्त्रियां एवं माल- असबाब छीन कर स्त्रियों को सुरक्षित उनके घर पहुंचाने के कारण सिक्ख 'बंदीछोड़ योद्धा' की पदवी से विभूषित हुए। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया 'बड़ा घल्लूघारा' मंक अत्यन्त शूरवीरता के साथ लड़ते हुए बाईस गहरे जख्म शरीर पर खाकर भी अजेय रहे और धर्मवीर योद्धा, पराक्रमी कहलाए।

नवाब कपूर सिंघ का निधन १७५३ ई. में हुआ। इस महान सिंघ की सरदारी और बहादुरी के असली उत्तराधिकारी सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ही थे और वही सरबत्त खालसा के बेताज बादशाह स्वीकार हो चुके थे।

"अदीना बेग खान को हुशियारपुर में भारी पराजय देकर, उसके इलाके के शासक बन कर वे बैसाखी के अवसर पर श्री अमृतसर साहिब 'सरबत्त खालसा' की बैठक में पहुंच गए। उसी जोड़ मेले पर 'सरबत्त खालसा' द्वारा 'गुरमता' पास कर 'दल खालसा' को ग्यारह मिसलों में बांटा गया। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया जहां आहलूवालिया मिसल के सरदार थे, वहीं उन्हें सभी मिसलों का प्रमुख सरदार और सुप्रीम कमांडर भी स्थापित किया गया। सिक्ख नवाब कपूर सिंघ को 'नवाब' नाम से संबोधित किया करते थे, सरदार जस्सा सिंघ को 'पातशाह' नाम से संबोधित किया जाने लगा।" (प्रमुख सिक्ख शख़सीअतां, संपादक डॉ. रूप सिंघ, डॉ. जीत सिंघ सीतल के लेख पृष्ठ १३८-३९ से उद्धृत)

ऐतिहासिक सूत्रों के अनुसार अमर शहीद बाबा दीप सिंघ जी द्वारा प्रारंभ किए गए कार्य को संपूर्ण करने वाले सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ही थे। बाबा दीप सिंघ जी की शहादत के उपरान्त जालिम शासकों एवं मुगल पठानों को छठी का दूध याद दिलाने अर्थात् कदाचित न भूलने वाला सबक सिखाने हेतु

सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने ही सभी मिसलदारों को बदला लेने के लिए ललकारा था तथा जलंधर तक मुगल पठानी फौज को धकेलते हुए १७५८ ई. में उनको वापिस काबुल भाग जाने के लिए मजबूर कर दिया था। तैमूर (अब्दाली का पुत्र) तथा उसका चीफ कमांडर जहान खान बड़ी मुश्किल से जान बचाकर भाग निकले। वजीराबाद के पास चिनाब दरिया से गुजरते समय उनका सारा माल-असबाब भी छीन लिया गया। हिंदोस्तान की बहू-बेटियों को बंदी बनाने वालों तथा पठान लश्करियों को बांध कर श्री अमृतसर साहिब लाया गया और उनसे श्री हरिमंदर साहिब का सरोवर साफ करवाया गया। अब्दाली जैसे दुष्ट हाकिम ने जो अपमान श्री हरिमंदर साहिब का किया था, उसका पूरा बदला इन शूरवीरों ने गुरु-कृपा से ले लिया था। इस प्रकार सिक्ख अब पंजाब के वाहिद हाकिम थे।

किसी शायर ने क्या खूब लिखा है :

तुम ख्याल करो भारतवासी,
नहीं मिली आजादी सस्ती है।
गुरु गोबिंद सिंघ के बेटे हो तुम,
उतनी ही तुम्हारी हस्ती है।
हर एक अजीत-जुझार बने,
उनके दिल में यह आया था।
देश-कौम की खातिर ही
जिन्होंने सरबंस लुटाया था।

गुरु साहिब के सच्चे सपूत सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, जो कि खालसा राज्य स्थापित करने में अग्रणीय थे, खालसा पंथ में शक्ति का संचार करने हेतु हर विषम परिस्थिति में डटे रहे। घल्लूघारों में बेशुमार जख्म खाकर भी खालसा पंथ अदम्य उत्साह से सैकड़ों साथियों हेतु अटल हिमालय बनकर उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने में कामयाब हुआ।

अपने पवित्र रक्त का कतरा-कतरा बहाकर खालसा पंथ का सूर्य उदित करने वाले संत-सिपाही, निर्भीक योद्धा, अतुलनीय जरनैल, शूरवीर सेनापति, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, तीक्ष्ण बुद्धि वाले दूरदर्शी, सुलतान-उल-कौम सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को कोटि-कोटि नमन!

एक महान आंदोलन : सिंघ सभा लहर

*–डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल**

महाराजा रणजीत सिंघ द्वारा स्थापित सिक्ख राज्य को अंग्रेजों ने २९ मार्च १८४९ को अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया। सिक्खों की राजनीतिक प्रभुसत्ता समाप्त हो जाने के बाद सिक्खों के लिए बहुत कठिनाइयों से भरा समय शुरू हो गया था। सिक्खों के बीच धार्मिक प्रचार, सिक्ख धर्म तथा गुरबाणी का अध्ययन लगभग समाप्त होने लगा था और सिक्ख केवल नाम के सिक्ख रह गए थे। श्री हरिमंदर साहिब, श्री अकाल तख़्त साहिब तथा अन्य बड़े गुरुद्वारे ब्रिटिश सरकार के प्रबंधन में आ गए थे। ईसाई धर्म का प्रचार तेज हो गया था। ब्राह्मणवाद का प्रभाव मजबूत होता चला जा रहा था। सिक्ख धर्म के खिलाफ ग़लत प्रचार शुरू कर दिया गया था और सिक्खों के बीच खालसा पंथ की नवीनता समाप्त होती जा रही थी।

सिक्ख धर्म के सामने आई इन चुनौतियों का सामना करने, ईसाई मत और ब्राह्मणवाद के घातक हमले से सिक्खों को बचाने, पंजाबी भाषा के प्रचार-प्रसार तथा सिक्खों को संगठित एवं शक्तिशाली बनाने के उद्देश्य से १९वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पंजाब में एक शक्तिशाली आंदोलन चला। यह आंदोलन इतिहास में 'सिंघ सभा लहर' नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस आंदोलन ने सिक्ख धर्म और सिक्ख जीवन के पुनरुत्थान के साथ-साथ सिक्खों के बौद्धिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आंदोलन की उत्पत्ति के प्रमुख कारण : अंग्रेजों द्वारा सिक्ख राज्य पर कब्ज़ा कर लेने के बाद सिक्खों की कोई संगठनात्मक संस्था उन दिनों नहीं रह गई थी। सिक्खों में किसी केंद्रीय नेतृत्व का पूरी तरह से अभाव हो गया था।

सिक्खों में ब्राह्मणवाद का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। ये सिक्ख सिद्धांतों के विरुद्ध आचरण करने लगे थे। सिक्ख उन अंधविश्वासों, कर्मकांडों और रीति-रिवाजों में विश्वास करने लगे थे, जिनका गुरु साहिबान ने खंडन किया था। बेदी तथा सोढी खानदानों से सम्बन्ध रखने वाले कई व्यक्तियों ने गुरुगद्दियां स्थापित कर ली थीं। निरंकारी, राधा स्वामी तथा कूका आंदोलनों से भी सिक्ख धर्म को ख़तरा पैदा हो गया था। गुरुद्वारा साहिबान में सिक्ख मर्यादा का ठीक तरह से पालन नहीं हो रहा था। सिक्ख अपनी परम्पराओं एवं धार्मिक मर्यादाओं को भूलते जा रहे थे। अतः एक शक्तिशाली आंदोलन चला कर सिक्ख धर्म के पुनरुत्थान का कार्य आरम्भ करने की परम आवश्यकता थी।

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना–१४११०१, फोन : ६२३९६-०१६४१*

अंग्रेजों के पंजाब पर अधिकार के बाद पंजाब में ईसाइयों का प्रचार बहुत बढ़ गया था। पंजाब का चीफ कमिश्नर जॉन लॉरेंस ईसाई मत के प्रसार को संरक्षण देता था। कई सिक्ख ईसाई बन गए थे। अमेरिकन प्रेसबाइटेरियन मिशन की लुधियाना में १८३४ ई. में स्थापना हो चुकी थी। चर्च मिशनरी सोसाइटी ने १८५१ ई. से पंजाब के विभिन्न स्थानों से ईसाई मत के प्रचार का कार्य शुरू कर दिया था। १८५२ ई. में एक अन्य मिशनरी संस्था 'द सोसायटी फॉर द प्रोपेगेशन ऑफ द गोस्पल' ने अपना प्रचार-कार्य शुरू कर दिया था। इनके अतिरिक्त कई अन्य विदेशी मिशनरी संस्थाओं ने पंजाब में ईसाई मत के प्रचार के कार्य को आगे बढ़ाना शुरू कर दिया था। अंग्रेज सरकार की ओर से इनको संरक्षण तथा सहयोग मिलता था। १८५३ ई. में महाराजा दिलीप सिंघ को ईसाई बना लेने से कई महत्त्वपूर्ण सिक्ख इस समस्या की गम्भीरता को अनुभव करने लगे थे। अंग्रेज शिक्षा के माध्यम से ईसाई धर्म का प्रचार करना चाहते थे। उन्होंने १८५३ ई. में श्री अमृतसर साहिब में अपना एक मिशनरी स्कूल खोल दिया था। ऐसे मिशनरी स्कूलों के सिक्ख विद्यार्थियों का झुकाव ईसाई धर्म की ओर होने लगा था। सन् १८७३ में चार सिक्ख विद्यार्थियों ने ईसाई बनने की इच्छा प्रकट की तो सिक्ख विद्वान चिंतित हो उठे। शुरू में ईसाई धर्माचार्य गरीब वर्ग के सिक्खों को ईसाई बनाने का यत्न करते थे, परन्तु फिर उन्होंने शिक्षित तथा जागीरदार घरानों के सिक्खों को भी ईसाई बनाने का कार्य शुरू कर दिया। यदि सिक्ख धर्म का पुनरुत्थान न किया जाता तो इसके अस्तित्व के लिए ईसाई मत एक बड़ा ख़तरा बन सकता था।

ईसाई धर्म के अतिरिक्त पंजाब में आर्य समाज, ब्रह्म समाज, थियोसोफिकल सोसायटी आदि का प्रचार-कार्य भी बढ़ रहा था। कई महत्त्वपूर्ण सिक्खों का इन मतों की ओर झुकाव हो गया था। सिक्ख धर्म को अन्य धर्मों के प्रभाव से मुक्त रखने के लिए कोई आंदोलन चलाने की परम आवश्यकता थी।

१८४९ ई. में पंजाब पर अंग्रेजों का अधिकार हो जाने के पश्चात् यहां भी अंग्रेज़ी शिक्षा का प्रसार होने लगा था। पश्चिमी शिक्षा के प्रसार से सिक्खों में भी बौद्धिक जागृति उत्पन्न हुई। वे भी अपने धर्म के सुधार एवं उत्थान के बारे में सोचने लगे। इसी सोच ने 'सिंघ सभा लहर' को जन्म दिया।

सिंघ सभा लहर की उत्पत्ति में कई विशिष्ट सिक्ख नेताओं, जैसे सरदार खेम सिंघ (बेदी), सरदार ठाकुर सिंघ संधावालिया, ज्ञानी गिआन सिंघ, प्रो. भाई गुरमुख सिंघ आदि ने विशेष भूमिका निभाई। इनके यत्नों एवं परिश्रम के कारण ही सिंघ सभा लहर की उत्पत्ति तथा विकास हुआ।

सिंघ सभा लहर का आरंभ : आश्विन सुदी १, नानकशाही संवत् ४०४ मुताबिक १ अक्तूबर, १८७३ ई. को सरदार खेम सिंघ (बेदी) तथा सरदार ठाकुर सिंघ संधावालिया के प्रयत्नों के फलस्वरूप श्री अमृतसर साहिब में गुरुद्वारा मंजी साहिब दीवान हॉल नामक स्थान पर पंजाब के विभिन्न स्थानों से आये हुए सिक्खों का एक महासम्मेलन आयोजित हुआ। इस सम्मेलन में

एक नई जत्थेबंदी गठित की गई। इसका नाम रखा गया— श्री गुरु सिंघ सभा। इस सभा के प्रथम प्रधान सरदार ठाकुर सिंघ संधावालिया तथा सेक्रेटरी ज्ञानी गिआन सिंघ चुने गये। सदस्य बनने के कुछ नियम बनाये गये। सिक्ख धर्म में विश्वास रखने वाला तथा इसकी सेवा करने की प्रतिज्ञा करने वाला प्रत्येक व्यक्ति इसका सदस्य बन सकता था। इसकी कार्यकारिणी में प्रधान, उपप्रधान, सचिव, उपसचिव, ज्ञानी, उपदेशक, कोषाध्यक्ष तथा लाइब्रेरियन आदि अधिकारियों की व्यवस्था की गई।

सिंघ सभा लहर का विकास : अपनी स्थापना के तुरंत बाद से इस लहर का तेज़ी से विकास आरंभ हो गया। १८७६ ई. में प्रो. भाई गुरमुख सिंघ ने सिक्खों के समक्ष सुधार का एक ठोस कार्यक्रम प्रस्तुत किया था। यह कार्यक्रम था— गुरमुखी का प्रचार-प्रसार करना, सिक्खों को धर्म की शिक्षा प्रदान करना, अन्य धर्मों के प्रभाव से सिक्ख धर्म की रक्षा करना और ब्रिटिश सरकार के साथ सहयोगी रवैया रखना।

प्रो. भाई गुरमुख सिंघ के यत्नों से ही पंजाब यूनिवर्सिटी, ओरिएंटल कॉलेज, लाहौर में १८७७ ई. में से पंजाबी की पढ़ाई शुरू की गई। उन्हें इस संस्था में पंजाबी भाषा का प्राध्यापक नियुक्त किया गया था। इस प्रकार वे पंजाबी भाषा के पहले प्रोफेसर बने। १८७९ ई. उनके यत्नों से 'लाहौर सिंघ सभा' की स्थापना हुई। कुछ सरकारी आफिसर भी लाहौर सिंघ सभा के सदस्य बन गये। पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर राबर्ट इगरटन ने इस संस्था का संरक्षक बनना स्वीकार कर लिया। १० नवंबर, १८८० ई. से भाई गुरमुख सिंघ ने 'गुरमुखी अखबार' नामक पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया। पंजाबी पत्रकारिता के क्षेत्र में यह एक अभूतपूर्व कार्य था। धीरे-धीरे सिंघ सभाएं पंजाब के अनेक नगरों में स्थापित हो गईं। समस्त सिंघ सभाओं को एक केंद्रीय संस्था के साथ जोड़े रखने के लिए श्री अमृतसर साहिब में 'चीफ खालसा दीवान' की स्थापना सन् १९०२ में की गई। १९२० ई. तक इनकी संख्या १०५ तक पहुंच चुकी थी।

सिंघ सभा लहर का प्रचार विदेशों में भी ख़ूब हुआ। कनाडा, अमेरिका, चीन जैसे देशों में भी 'खालसा दीवान' स्थापित किये गये। महाराजा पटियाला भूपिंदर सिंघ ने लंदन में खालसा धर्मशाला स्थापित की।

श्री गुरु सिंघ सभा के लक्ष्य : श्री अमृतसर साहिब तथा लाहौर की सिंघ सभाओं ने सिंघ सभा लहर के लक्ष्यों को निश्चित किया। ये लक्ष्य थे— सिक्ख धर्म को संगठित करना एवं शक्तिशाली बनाना, सिक्खों में घर कर गईं सामाजिक तथा धार्मिक बुराइयों को दूर करना, सिक्ख धर्म को ईसाई, इसलाम तथा अन्य धर्मों के ख़तरे से बचाना, पश्चिमी शिक्षा-प्रणाली को अपनाकर सिक्खों में जागृति तथा बौद्धिक जागृति पैदा करना, अपने स्कूल तथा कॉलेज खोल कर सिक्खों में शिक्षा का प्रसार करना, सिक्ख मर्यादा को पुनर्जीवित करना, गुरु साहिबान, श्री गुरु ग्रंथ साहिब एवं सिक्ख धर्म की शिक्षाओं के प्रति

सिक्खों में श्रद्धा की भावना पैदा करना, अनाथालय, विधवा आश्रम तथा अस्पताल आदि का निर्माण करके सामाजिक सेवा के कार्य करना, पंजाबी भाषा का प्रचार करना तथा इसमें समाचार-पत्र, पत्रिकाएं व साहित्य आदि प्रकाशित करवाने की व्यवस्था करना, सिक्ख धर्म को त्याग कर अन्य धर्मों में गये सिक्खों को सिक्ख धर्म में वापिस लाना, सिक्ख धर्म एवं संस्कृति से सम्बन्धित पुस्तकें व इतिहास लिखवाना, सिक्ख धर्म एवं इतिहास पर लिखी गई त्रुटिपूर्ण पुस्तकों को ठीक करवाना, गुरुद्वारा साहिबान में मर्यादा स्थापित कराना और सिक्ख धर्म के प्रचारकों को प्रशिक्षण देना तथा उनको दूर-दराज के ग्रामीण क्षेत्रों में भेजना।

सिंघ सभा लहर की उपलब्धियां : सिंघ सभा लहर के प्रचारकों ने जनता को सिक्ख धर्म के वास्तविक सिद्धांतों का ज्ञान पंजाबी भाषा में करवाया। इन प्रचारकों ने गुरु साहिबान की शिक्षाओं की ठीक ढंग से व्याख्या की और गुरबाणी का प्रचार किया। दूर-दराज के गांवों में जाकर लोगों को बताया कि खोखले रीति-रिवाजों के कारण सिक्ख धर्म का पतन हो रहा है। गांवों में झूठा प्रचार कर रहे झूठे साधु-सन्तों और फकीरों की भ्रष्ट गतिविधियों का पर्दाफाश किया। समाधियों, दरगाहों तथा मूर्ति-पूजा का खंडन किया और सिक्खों को सन्मार्ग पर लाने का यत्न किया।

सिंघ सभा की स्थापना से सिक्ख धर्म की रक्षा हुई। ईसाई धर्म के प्रभाव में आ जाने वाले अनेक सिक्खों को वापस सिक्ख धर्म में लाया गया। सिंघ सभा के प्रचारकों ने बड़े ज़ोर-शोर से सिक्ख धर्म का प्रचार किया। पंजाब के भिन्न-भिन्न भागों में गुरुद्वारा साहिबान स्थापित किये गये। सिक्ख प्रचारकों को विशेष प्रकार की शिक्षा दी जाने लगी। उनको विशेष आदेश दिया गया था कि वे लोगों के सामने आदर्श जीवन व्यतीत करें, अपना आचरण शुद्ध तथा पवित्र रखें, गुरु साहिबान के बताये गये सिद्धांतों के अनुसार जीवन-यापन करें और लोगों के सामने आदर्श सिक्ख का उदाहरण रखें। लोग इन सिक्ख प्रचारकों के जीवन-आदर्शों से प्रभावित होकर स्वयं ही सिक्ख धर्म में वापस आने लगे। इस प्रकार सिक्ख धर्म पुन: प्रगति के-पथ पर अग्रसर होने लगा। सिंघ सभा लहर के अथक प्रयासों और नि:स्वार्थ सेवा-भावना के परिणामस्वरूप सिक्ख धर्म का अद्भुत विकास हुआ।

सिंघ सभा लहर ने सामाजिक क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण सफलताएं प्राप्त की। सिंघ सभा लहर ने जात-पांत और छुआ-छूत जैसी सामाजिक बुराइयों का जबरदस्त खंडन किया।

सिंघ सभा लहर के प्रचारकों ने स्त्रियों के उद्धार के लिये अनेक कदम उठाये। उन्होंने पर्दा-प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई, विधवाओं के पुनर्विवाह की व्यवस्था की। उन्होंने कन्या-वध तथा बाल-विवाह जैसी सामाजिक बुराइयों का ज़ोरदार शब्दों में खंडन किया।

सिंघ सभा लहर के प्रयासों से ही २२ अक्तूबर, १९०९ ई. को सिक्ख परंपरा के अनुसार विवाह को

अनंद मैरिज एक्ट के रूप में लागू कर दिया गया। इसी तरह २५ जून, १९१४ ईस्वी को पंजाब प्रांत में सिक्खों को कृपाण धारण करने का अधिकार प्राप्त हो गया। बाद में, ११ मई, १९१७ ई. से कृपाण धारण करने के अधिकार को पूरे भारत में लागू कर दिया गया।

सिंघ सभा लहर के प्रयत्नों के फलस्वरूप अनेक सामाजिक बुराइयां समाज से लुप्त हो गईं। पंथ के अनाथ बच्चों के लिये अनाथालय खोले गये। नेत्रहीन लोगों के लिये अन्ध आश्रम खोले गये। विधवा औरतों के लिये विधवा आश्रम स्थापित किये गये। सिंघ सभा ने गरीब तथा बीमार लोगों की सहायता के लिये खालसा अस्पतालों का निर्माण करवाया, जहां निर्धन रोगियों का मुफ्त इलाज किया जाता था। लड़कियों के लिये खालसा दस्तकारी स्कूल खोले गये ताकि लड़कियों को आत्मनिर्भर बनाया जा सके।

सिंघ सभा लहर ने शिक्षा तथा साहित्य के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण सफलताएं प्राप्त की। इस लहर के मुख्य उद्देश्यों में से एक उद्देश्य पंजाब में सिक्ख धर्म के सिद्धांतों के अनुसार शिक्षा का विकास करना था। वे जानते थे कि शिक्षा के बिना जागृति का आना असम्भव है। शिक्षा मनुष्य को सभ्य तथा ज्ञानी बना देती है। शिक्षा के द्वारा उसे अच्छाई तथा बुराई की पहचान होती है। शिक्षा के बिना मानसिक तथा आध्यात्मिक उन्नति असम्भव है। सिंघ सभा लहर ने बहुत-से पढ़े-लिखे सिक्खों को अपनी ओर आकर्षित किया। सिक्ख धर्म के अनुसार शिक्षा देने के लिये स्थान-स्थान पर खालसा स्कूल तथा खालसा कॉलेज खोले गये। बाबा खेम सिंघ (बेदी) ने गुरमुखी स्कूल खोलने का काम शुरू किया। इन स्कूलों में सिक्ख धर्म के अनुसार शिक्षा प्रदान की जाने लगी। उच्च शिक्षा के विकास के लिये कॉलेजों की स्थापना की गई। १८९२ ई. में खालसा कॉलेज श्री अमृतसर साहिब की स्थापना इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। इस संस्था ने सिक्ख छात्रों के लिये उच्च शिक्षा के द्वार खोल दिये। धीरे-धीरे पंजाब के अनेक नगरों में खालसा स्कूल और कॉलेजों का जाल बिछ गया, जैसे लायलपुर खालसा कालेज, गुजरांवाला खालसा कॉलेज, खालसा स्कूल नारोवाल, खालसा स्कूल शकरगढ़ आदि।

सिंघ सभा लहर ने स्त्रियों की शिक्षा की ओर भी विशेष ध्यान दिया। पंजाब के विभिन्न नगरों में लड़कियों के लिये स्कूल तथा कॉलेज खोले गये। इन संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा भी दी जाती थी।

सिंघ सभा लहर ने पंजाबी भाषा तथा गुरमुखी लिपि के प्रचार तथा प्रसार के लिये भी सराहनीय कार्य किये। पंजाबी भाषा में पुस्तकें छापने का काम बड़े ज़ोरों से आरम्भ हुआ। नाभा के राजा हीरा सिंघ के सहयोग से लाहौर में खालसा प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की गई। इसके पश्चात लाहौर तथा श्री अमृतसर साहिब में कई छापेखाने खोले गये, जिनमें पंजाबी पुस्तकें, अखबार तथा साहित्य प्रकाशित होना शुरू हुआ। सिक्ख समाचार-पत्रों में 'खालसा समाचार', 'खालसा अखबार', 'खालसा एडवोकेट', 'खालसा गजट', 'खालसा बहादुर' तथा 'सिंघ सहाय' के नाम उल्लेखनीय हैं।

इन अखबारों में सिक्ख धर्म सम्बन्धी बहुमूल्य लेख छपते थे, जिन्हें पढ़ कर लोगों की सिक्ख धर्म के प्रति आस्था बढ़ी। यही नहीं, सिक्ख धर्म से सम्बन्धित अनेक पुस्तकें छपने लगीं। ज्ञानी गिआन सिंघ ने 'तवारीखे-गुरू खालसा' जैसे प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की। सिक्ख इतिहास तथा धर्म से सम्बन्धित कई पुस्तकें एवं टीके छापे गये। भाई काह्न सिंघ नाभा ने 'गुरु शब्द रत्नाकर महान कोश' की रचना की। इसके अतिरिक्त उन्होंने 'गुरमति सुधाकर', 'गुरमति प्रभाकर', 'गुरमति मार्तंड' तथा 'हम हिंदू नहीं' नामक ग्रन्थ भी लिखे। १८९४ ई. में भाई वीर सिंघ ने 'खालसा ट्रेक्ट सोसायटी' की स्थापना की। इस सोसायटी में सिक्ख धर्म से सम्बन्धित अनेक छोटी-छोटी पुस्तिकाएं प्रकाशित की जाती थीं। श्रेष्ठ व्याख्याकार-टीकाकार, पंजाबी पत्रकारिता के पितामह, 'ख़ालसा अखबार' के संस्थापक-संपादक ज्ञानी दित्त सिंघ का योगदान भी विरोध रूप से उल्लेखनीय रहा। ज्ञानी दित्त सिंघ ने तत्कालीन सिक्ख समाज में से जात-पांत, मूर्ति-पूजा व देहधारी गुरु-प्रथा का जोरदार ढंग से खंडन व विरोध किया। इस प्रकार इन विद्वानों के यत्नों से पंजाबी भाषा का प्रशंसनीय विकास हुआ।

सिंघ सभा लहर के नेता तथा कार्यकर्ता अंग्रेज सरकार के विरुद्ध किसी भी प्रकार की गतिविधियों में भाग नहीं लेना चाहते थे, क्योंकि उनका मकसद अपने मुकाम को बेरोक हासिल करना था। वे अपनी लहर को सरकार के सहयोग से चलाना चाहते थे, इसीलिये पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर सर राबर्ट इर्गटन को लाहौर सिंघ सभा का संरक्षक बनाया गया और अन्य अंग्रेज अधिकारियों को इसमें शामिल किया गया। इसके बावजूद सिंघ सभा की राजनीतिक गतिविधियों में रुचि धीरे-धीरे बढ़ने लगी थी। सिंघ सभा के प्रचार के फलस्वरूप सिक्खों में जागृति पैदा हुई और वे राजनीतिक अधिकारों की मांग भी करने लगे। शिरोमणि अकाली दल के अस्तित्व में आने से पूर्व सिंघ सभा ही सिक्खों की एकमात्र संस्था थी, जिसने सिक्खों के राजनीतिक अधिकारों की रक्षा की थी। सिंघ सभा ने ४७ वर्ष तक सिक्खों का मार्गदर्शन किया। सिंघ सभा ने सिक्खों में ऐसी भावनाएं जागृत कर दीं, जिन्होंने बाद में उन्हें अपने राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति के लिये संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। सिंघ सभा के प्रयत्नों के फलस्वरूप ही 'शिरोमणि अकाली दल' का जन्म हुआ।

सिंघ सभा ने नाभा, पटियाला, जींद, कपूरथला तथा फरीदकोट रियासतों के शासकों के अधिकारों की रक्षा का भी प्रचार किया। जब कभी अंग्रेज सरकार इन रियासतों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करती थी, तो सिंघ सभा अपने समाचार-पत्रों में लेखों के माध्यम से सरकार को ऐसा करने से रोकती थी और सिक्ख रियासतों के साथ की गई मैत्रीपूर्ण संधियों की याद दिलाती थी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सिंघ सभा लहर ने कठिन समय में सिक्खों के लिये पुनर्जागरण का कार्य किया तथा सिक्खी के स्वरूप को और निखारा।

चीफ खालसा दीवान की स्थापना और इसके मुख्य कार्य

–डॉ. कशमीर सिंघ नूर*

चीफ खालसा दीवान की स्थापना ३० अक्तूबर, सन् १९०२ ई. को हुई थी। इस संस्था की स्थापना में भाई वीर सिंघ, भाई अरजन सिंघ बागड़ियां, स. सुंदर सिंघ मजीठिया, स. तरलोचन सिंघ और स. हरबंस सिंघ अटारी ने अहम भूमिका निभाई थी। संस्था का उद्घाटन-सत्र श्री अमृतसर साहिब के श्री हरिमंदर साहिब परिसर में मौजूद मलवई बुंगा में इसकी स्थापना के दिन ही आयोजित किया गया था। सर्वप्रथम इस सिक्ख संस्था की चढ़दी कला (प्रफुल्लता) के लिए वाहिगुरु के समक्ष अरदास की गई। अरदास स. तेजा सिंघ (भरपूर) द्वारा की गई। चीफ खालसा दीवान के इस प्रथम सत्र में निम्नलिखित व्यक्तियों को उच्च पद प्रदान किए गए : —

- स. अरजन सिंघ बागड़ियां— अध्यक्ष
- स. सुंदर सिंघ मजीठिया— सचिव
- स. सुजान सिंघ सोढी— अपर सचिव

सिक्ख समुदाय के लिए उत्साह व प्रसन्नता की यह बात हुई कि चीफ खालसा दीवान की स्थापना के बाद पच्चीस सिंघ सभएं चीफ खालसा दीवान के साथ जुड़ गईं। इससे आगे बढ़ते हुए एक वर्ष के भीतर ही इन सिंघ सभाएं की कुल संख्या तिरपन हो गई।

इस सिक्ख संस्था की स्थापना महान उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु की गई थी। यह संस्था सिक्खों की सांस्कृतिक, शैक्षिक, आध्यात्मिक तथा बौद्धिक व नैतिक पहचान को मज़बूत बनाने हेतु अस्तित्व में आई थी। यह संस्था श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पवित्र संदेशों व शिक्षाओं को बढ़ावा देने, सिक्ख इतिहास का प्रसार करने और उस समय की सरकार के साथ कूटनीति द्वारा सिक्खों के अधिकारों की रक्षा करने के प्रति समर्पित थी। शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना के माध्यम से सिक्खों के उत्थान व कल्याण के लिए चीफ खालसा दीवान द्वारा ठोस प्रयास किए गए। चीफ खालसा दीवान सिक्ख इतिहास से संबंधित विषयों, सिक्ख धर्म-ग्रंथों और खालसा पंथ से संबंधित सरोकारों के साथ जुड़ी कई कृतियों को प्रकाशित करने के लिए जिम्मेदार थी। इसके अलावा संगठन ने अनुवाद के कई काम किए। विभिन्न भाषाओं से अनुदित कर बहुत-सा साहित्य पंजाबी में प्रकाशित किया गया। चीफ खालसा

*बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००८, फोन : ९८७२२-५४९९०

दीवान द्वारा सिक्ख समुदाय के व्यापक कल्याण के लिए कई धर्मार्थ प्रतिष्ठानों की स्थापना की गई।

चीफ खालसा दीवान के लक्ष्य :

१. खालसा पंथ में आध्यात्मिक, बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक, शैक्षिक तथा आर्थिक उन्नति को बढ़ावा देना।

२. श्री गुरु ग्रंथ साहिब में निहित बाणीकारों की शिक्षाओं का प्रचार करना।

३. सिक्ख गुरु साहिबान की शिक्षाओं में विश्वास व आस्था रखने वाले लोगों के अधिकारों की रक्षा करना।

४. चीफ खालसा दीवान की गतिविधियों की सुविधाओं एवं लाभों को सभी लोगों तक उनकी जाति, पंथ या समुदाय के भेदभाव के बिना पहुंचाना। इससे सिक्ख समाज में ईसाई विचारधारा पनपने से रुकी।

५. पंजाबी भाषा और साहित्य को बढ़ावा देना।

६. गुणवत्तापूर्ण एवं आधुनिक शिक्षा के प्रसार हेतु नए स्कूल और कॉलेज खोलना, कुशलतापूर्वक उनका संचालन करना।

चीफ खालसा दीवान का संविधान : चीफ खालसा दीवान की सदस्यता अमृतधारी सिक्खों तक सीमित की गई। सदस्यों का गुरमुखी में साक्षर होना जरूरी करार किया गया। सिक्ख समाज के लोगों को अपने समुदाय के परोपकारी कार्यों के लिए अपनी वार्षिक आय में से प्रथागत दशमांश (दसवंध) दान करना अनिवार्य किया गया। अन्य सिक्ख संगठनों, जैसे सिंघ सभाओं को चीफ खालसा दीवान के साथ जोड़ने की आवश्यकता यह थी कि वे एक समान सिद्धांत प्रचलित कर सकें।

ऐतिहासिकता और प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका चीफ खालसा दीवान सैद्धांतिक रूप से पांच समितियों से बना था :—

१. सामान्य समिति : यह दीवान के सम्बद्ध संगठनों के प्रतिनिधियों, तख़्त साहिबान की नियुक्तियों, सिक्ख शासित रियासतों के प्रतिनिधियों और व्यक्तिगत सिक्खों से बनी होती थी, जो वित्तीय व सेवा संबंधी मापदंडों को पूरा करती थी। सामान्य समिति कार्यकारी समिति की नियुक्ति भी किया करती थी।

२. कार्यकारी समिति : यह समिति प्रत्येक माह बैठक आयोजित करती थी और चीफ खालसा दीवान के दिन-प्रतिदिन के कार्यों को पूरा करती थी। यह समिति अपने कार्यक्षेत्र से बाहर के महत्वपूर्ण मामलों को सामान्य समिति को हस्तांतरित कर देती थी।

३. वित्तीय समिति : यह समिति चीफ खालसा दीवान के वित्तीय मामलों को देखती थी और लेन-देन का पूरा हिसाब रखती थी।

४. सलाहकार समिति : संगठन के कानूनी,

प्रशासनिक तथा धार्मिक मामलों का निपटारा यह समिति किया करती थी।

५. आजीवन सदस्य समिति : चीफ खालसा दीवान ने सिक्ख गुरुओं के पावन संदेशों का प्रचार व प्रसार करने हेतु मिशनरियों का एक समूह स्थापित किया। पंजाब के विभिन्न क्षेत्रों में यात्रा की और खूब प्रचार किया। ये मिशनरियां उत्तरी-पश्चिमी सीमांत प्रांत औऱ सिंध में भी सक्रिय थीं। सन् १९०३ के दिल्ली दरबार में भाग लेने के लिए ड्यूक ऑफ कॉनॉट के भारत-आगमन की प्रत्याशा में चीफ खालसा दीवान ने दिल्ली शहर में एक शैक्षिक अभियान शुरू किया, जिसमें सिक्ख धर्म के बारे में आगंतुकों को सूचित करने हेतु दीवान आयोजित किए गए। संगत में वितरित करने के लिए श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चरित 'जपु जी साहिब' बाणी का अंग्रेजी अनुवाद तैयार किया गया।

सन् १९०३ में ही चीफ खालसा दीवान ने अपने आधिकारिक मुखपत्र के रूप में कार्य करने के लिए 'खालसा एडवोकेट' नामक एक मासिक समाचार-पत्र प्रकाशित करना शुरू किया। सैंट्रल खालसा यतीम खाना की स्थापना इसके प्राथमिक कार्यों में से एक थी, जो ११ अप्रैल, सन् १९०४ ई. को खुला। चीफ खालसा दीवान को ९ जुलाई, १९०४ ई. को 'सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम १८६०' के तहत पंजीकृत किया गया था।

उल्लेखनीय है कि सन् १९२० में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के गठन तक चीफ खालसा दीवान एकमात्र प्रमुख सिक्ख संगठन था, जो गुरुद्वारा साहिबान में होने वाली गैर-सिक्ख प्रथाओं को हटाने के लिए अभियान चला रहा था। इसने सन् १९०५ ई में श्री हरिमंदर साहिब के परिसर व परिक्रमा में से मूर्तियों को हटाने हेतु सफलतापूर्वक अभियान चलाया था।

सन् १९०६ ई. में चीफ खालसा दीवान ने रागी सिंघों, ग्रंथियों और गुरबाणी के प्रचारकों (उपदेशकों) को प्रशिक्षित करने हेतु तरनतारन में 'खालसा प्रचारक विद्यालय' की स्थापना की । सन् १९०८ में अखिल भारतीय सिक्ख शैक्षिक सम्मेलन की स्थापना के बाद चीफ खालसा दीवान ने एक शैक्षिक समिति की शुरूआत की। शैक्षिक समिति शैक्षिक, धार्मिक तथा सामाजिक मामलों पर सिक्ख दृष्टिकोणों को रिकॉर्ड करती है, व्यवस्थित करके उन पर चर्चा करती है, यानि उन्हें सिक्ख विद्वानों व बुद्धिजीवियों के पैनल में विचार-विमर्श हेतु प्रस्तुत करती है, चर्चा के परिणामस्वरूप प्राप्त लक्ष्यों व निर्णयों को अमली जामा पहनाने हेतु कदम उठाती है। आज तक शैक्षिक समिति द्वारा लगभग ६७ शैक्षिक सम्मेलन आयोजित किए जा चुके हैं। कई प्रसिद्ध हस्तियां, विद्वान, प्रमुख सिक्ख शिक्षाविद और व्यापारिक दिग्गज समय-समय पर इन सम्मेलनों में भाग लेते

आ रहे हैं। शैक्षिक समिति अपने अधिकार-क्षेत्र के अधीन शैक्षणिक संस्थानों में पढ़ रहे मेधावी सिक्ख छात्र-छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति व भत्ते की व्यवस्था भी करती है। यह समिति पंजाबी भाषा तथा इसके साहित्य को बढ़ावा देने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य करती है। यह अपने शिक्षण संस्थानों में पढ़ते विद्यार्थियों के उपयोग करने हेतु शैक्षिक रिपोर्ट तथा वर्गीकृत धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन करती है।

गुरमुखी में पंजाबी भाषा और इसके द्वारा रचित (निर्मित) साहित्य को बढ़ावा देने हेतु चीफ खालसा दीवान ने एक पंजाबी प्रचारक उप-समिति की भी स्थापना की हुई है। सरकारी विभागों में सरकारी कामकाज पंजाबी भाषा में हो, इसके लिए भी जोरदार अभियान चलाया गया। चीफ खालसा दीवान ने पंजाबी माध्यम वाले विद्यालयों एवं पुस्तकालयों का भी शुभारंभ किया। साथ ही व्यस्क शिक्षार्थियों के लिए रात्रि-कक्षाएं भी शुरू कीं।

अतीत में झांकें तो पता चलता है कि १९०८ ई. में नि:शुल्क वितरण के लिए लिथोग्राफ पोस्टर बनाने के उद्देश्य से 'खालसा हैंडबिल सोसाइटी' की शुरूआत की गई। 'अनंद विवाह (अनंद कारज) अधिनियम १९०९' को मान्यता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। चीफ खालसा दीवान के सदस्यों का तर्क था कि सिक्ख विवाह के संस्कारों के लिए कोई कानूनी आधार होना चाहिए और सिक्खों के वैवाहिक रीति-रिवाज़ों में हिंदू-प्रभाव न रहे। अन्य सिक्ख संगठनों की भांति चीफ खालसा दीवान ने भी भारत-विभाजन का कड़ा विरोध किया था।

चीफ खालसा दीवान सिक्ख समाज में बतौर चेरीटेबल सोसाइटी के रूप में अपनी विशेष व अलग पहचान बना चुका है। अब तो इसे 'चीफ खालसा दीवान चेरीटेबल सोसाइटी' भी कहा जाता है। विद्यालयों की लंबी शृंखला के अलावा यह सोसाइटी कई अस्पतालों व स्वास्थ्य केंद्रों का संचालन भी करती है। चीफ खालसा दीवान का नाम भारत के प्रमुख गैर-सरकारी संस्थाओं में शामिल हो चुका है। सुहृदय सिक्ख यह चाहते हैं कि चीफ खालसा दीवान चेरीटेबल सोसाइटी अपने गौरवपूर्ण व गरिमामयी इतिहास को कायम रखते हुए आगे बढ़ती रहे और चढ़दी कला में रहे।

शहीद भाई प्रताप सिंघ

–डॉ. अवतार सिंघ*

२६ मार्च, १८९९ ई.[१] को अकालगढ़, ज़िला गुजरांवाला (आजकल पाकिस्तान) में स. सरूप सिंघ और माता प्रेम कौर के घर भाई प्रताप सिंघ का जन्म हुआ। माता- पिता गुरु-घर के आस्थावान भक्त, ऊँचे प्रताप वाले, हर समय ज़रूरतमंदों के साथ खड़े होने वाले थे। घर में बाणी का प्रवाह हर समय चलता रहता था।

बचपन से ही आपका लगाव गुरबाणी के साथ था। आप गतका के शौकीन थे। देश की ग़ुलामी आपकी आज़ाद रूह को छलनी कर जाती थी।

माता-पिता नहीं चाहते थे कि आप राजनैतिक कार्यों में हिस्सा लें, इसलिए आपको आपके भाई के पास भेज दिया गया, जो कि उस समय शिमला आर्मी हेड क्वार्टर में नौकरी करता था। भाई ने इन्हें फ़ौज में भरती करवा दिया। उन्नीस वर्ष की आयु में आपकी शादी बीबी हरनाम कौर के साथ हुई, जो कि उस समय लगभग १५ वर्ष की थी।

शिमला में भाई प्रताप सिंघ का एक डॉक्टर दोस्त था। उसका दो वर्षीय लड़का मर गया। डॉक्टर ने सबको ईश्वर का आदेश सहर्ष मानने के लिए कहा और आग्रह किया कि पुत्र के निधन पर कोई भी अश्रु न बहाए। भाई प्रताप सिंघ पर इस घटना का गहरा प्रभाव पड़ा कि इतिहास में धैर्यवान सिक्खों के बारे में तो पढ़ा करते थे, मगर आज आंखों के सामने देख लिया। उन्होंने मन ही मन एक प्रण भी कर लिया।

आपके घर पहली संतान— पुत्र पैदा हुआ जो कि बहुत ही होनहार था। इसी दौरान आपका स्थानांतरण शिमला से रावलपिंडी हो गया। उस समय अकाली लहर यौवन पर थी। ऐसे में भाई जी का उस लहर से अछूता रहना नामुमकिन था। निष्कर्षत: आप काली पगड़ी सजाने लगे। जब भाई जी अपने दफ़्तर पहुँचे तो आपका आफिसर, जो कि अंग्रेज़ था, काली पगड़ी देख कर बहुत नाराज़ हुआ और हुक्म दिया— "मिस्टर सिंघ! आप दफ़्तर में काली पगड़ी पहन कर नहीं आ सकते!" भाई जी की उसके साथ बहस हो गई। हाकिम-जमात थी। फलस्वरूप आप ने इस्तीफ़ा दे दिया और घर लौट आए।

इनके घर लौटने का समाचार जब नगर निवासियों को पता चला तो उन्होंने ख़ुशी का इज़हार किया। जलियां वाला बाग़ के आंदोलन में भी आपने भाग लिया। बाद में गुरुद्वारा पंजा साहिब आज़ाद कराने के लिए बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। गुरुद्वारा पंजा साहिब के मुख्य प्रबंधक के तौर पर आपने सेवा निभानी शुरू की और दो वर्ष तक सेवा

** प्रिंसिपल, शहीद बाबा प्रताप सिंघ मे. सी. सें. स्कूल, सुलतानविंड रोड, श्री अमृतसर- १४३००६; मो. ९८७२५२३११७*

१ कुछ स्रोतों के अनुसार २१ सितंबर, १८९८ ई.

निभाई। आपने सूती वस्त्र पहनना शुरू कर दिए।

आपके घर पैदा हुआ पुत्र जनवरी, १९२२ में दो वर्ष का हो गया। एक दिन आपका पुत्र खेलते हुए खौलते पानी की देग में गिर गया और भगवान को प्यारा हो गया। भाई जी को मन ही मन किया गया प्रण याद था, जो इन्होंने शिमला में डॉक्टर के बच्चे के निधन पर किया था। भाई जी धैर्य में अडिग रहे और गुरबाणी गायन करते हुए अंतिम संस्कार किया।

सन् १९२२ में गुरुद्वारा गुरु का बाग़ का मोर्चा लगा। गुरुद्वारा गुरु का बाग़ का महंत सुंदर दास अय्याश किस्म का आदमी था। उसके व्यवहार और कार्यशैली से इलाका निवासी दुखी थे। वे महंत अंग्रेज़ अफसरों की शह पर कुकृत्य कर रहा था।

मोर्चा लगने पर अकाली सिंघों पर अत्याचार हुआ और उन्हें जेल में डालना आरंभ कर दिया। जब पंजाब की जेलें कैद किये अकाली सिंघों के साथ भर गईं तो उन्हें पंजाब से बाहर भेजना शुरू कर दिया गया। बहुत-से कैदी सिंघों को अटक जेल ले जाने का हुक्म हुआ।

उन कैदी सिंघों को भूखे-प्यासे हालात में लेकर रेलगाड़ी अटक के लिए रवाना हुई। रास्ते में हसन अब्दाल स्टेशन है, जिसका वर्तमान नाम 'पंजा साहिब' है। भाई प्रताप सिंघ ने स्टेशन मास्टर, जो कि हिंदू था, से कहा कि गाड़ी स्टेशन पर रोकी जाए, ताकि दूर से आ रहे भूखे-प्यासे सिंघों को लंगर-पानी छकाया जा सके। स्टेशन मास्टर ने भाई जी को संदेश भेजा कि सिक्ख कैदियों की एक गाड़ी प्रात: काल आठ बजे आ रही है। संदेश मिलने की देर थी कि संगत ने लंगर-प्रसाद तैयार करना आरंभ कर दिया। दीवान की समाप्ति के बाद अरदास की गई, "हे सच्चे पातशाह! हम सिंघ वीरों के लिए लंगर-प्रसाद तैयार कर ले जा रहे हैं। हमारी मदद करना, ताकि हम लंगर छका कर ही वापस लौटें।" जब स्टेशन पर पहुँचे तो स्टेशन मास्टर ने कहा कि "अब गाड़ी यहाँ खड़ी न करने का हुक्म आ गया है।" भाई प्रताप सिंघ ने स्टेशन मास्टर से पूछा कि "कोई ढंग तो होगा गाड़ी खड़ी करने का?" स्टेशन मास्टर ने बताया कि "चलती हुई गाड़ी केवल उसी समय रोकी जा सकती है यदि कोई दुर्घटना हो जाए, कोई जीव या बड़ी वस्तु गाड़ी के नीचे आ जाये।" स्टेशन मास्टर का उत्तर सुनकर संगत में और भी जोश भर आया। भाई जी ने संगत से कहा कि "लंगर-प्रसाद प्लेटफार्म पर रखो, गाड़ी अवश्य रुकेगी।" भाई प्रताप सिंघ की धर्म-पत्नी के बताए अनुसार, "उस समय संगत की संख्या ३०० के लगभग थी। जोश भरी तकरीरें शुरू हो गईं और संगत रेलवे लाईन पर बैठ गई। बाणी का पाठ प्रारंभ हो गया।" इस घटना का ज़िक्र पंजाबी के सुप्रसिद्ध कहानीकार स. करतार सिंघ (दुग्गल) अपनी कहानी 'करामात' में भी करते हैं।

संगत में सबसे आगे भाई प्रताप सिंघ और भाई करम सिंघ बैठे थे। गाड़ी आई और चालक ने सीटी दी, परन्तु कोई न उठा। गाड़ी भाई प्रताप सिंघ और भाई करम सिंघ तथा उनके साथ बैठे अन्य सिंघों के ऊपर से गुज़र गई। भाई प्रताप सिंघ गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्होंने कहा, "पहले संगत को लंगर छकाओ, फिर हमारी खबर लेना! अगर आप लोगों ने हमें गाड़ी के नीचे से निकाल लिया तो

चालक गाड़ी भगा कर ले जायेगा।" लंगर छका कर रेलवे लाईन पर से घायल सिंघों को उठाया गया। छ: सिंघों के हाथ पैर कट गए थे। भाई करम सिंघ घटना-स्थल पर ही शहादत प्राप्त कर गए थे। भाई प्रताप सिंघ ने अगली सुबह अमृत बेला में प्राण त्यागे। उनकी पत्नी जब उनके पास आई तो भाई जी ने कहा, "मेरे पास आकर रोना मत, बल्कि खुश होना कि मैं सिक्खी की परीक्षा में से पास होकर जा रहा हूं।" भाई जी के जबाड़े और माथे पर गहरी चोट थी। आपने घायलावस्था में ही 'जपु जी साहिब' का पाठ किया।

भाई प्रताप सिंघ का पुत्र का तो पहले ही देहावसान हो चुका था। उनकी पुत्री बीबी जोगिंदर कौर उनकी शहादत के कुछ महीने बाद पैदा हुई।

गाड़ी का चालक ज़िला गुजरात का एक मुसलमान था। उसके विरुद्ध सरकार ने एक जज द्वारा जाँच-पड़ताल करवाई। चालक ने जो बयान जज के सामने दिए, उनका भी ऐतिहासिक महत्व है। उसने कहा, "मुझे हुक्म था कि गाड़ी रोकी न जाये। यह हुक्म मुझे मौखिक प्राप्त हुआ। मैंने उसी हुक्म के अनुसार गाड़ी नहीं रोकी और मैं पूरी रफ़्तार के साथ गाड़ी को चला रहा था। जब गाड़ी संगत के साथ टकराई तो मुझे एहसास हुआ जैसे गाड़ी किसी पहाड़ के साथ जा टकराई हो। फिर मेरा हाथ वैक्यूम से छूट गया और गाड़ी रुक गई।" इंजन की जाँच-पड़ताल करने से भी पता चला कि ब्रेक नहीं लगाई गई। बाद में उस चालक को सरकार ने नौकरी से निलंबित कर दिया था।

इस घटना में भाई प्रताप सिंघ और भाई करम सिंघ शहीद हुए। बाकी जो सिंघ गाड़ी के नीचे आए थे, उनकी जान तो बच गई, मगर उन्हें चोटें बहुत लगी थीं। बीबी हरनाम कौर को भी बहुत चोट लगी। कई महीने के इलाज के बाद वो ठीक हो पाई।

सिक्खी जहाँ बहादुरी का प्रतीक है वहाँ "तेरा कीआ मीठा लागै" की धारक भी है। सिक्ख ज़ुल्म नहीं करते, बल्कि जालिमों का मुकाबला करते हैं।

जब २०वीं सदी के आरंभ में विभिन्न धार्मिक स्थानों पर साके घटित हुए तो अनेक लेखकों, राजनीतिज्ञों तथा दानिशमंद लोगों ने ज़ुल्म और जब्र की घोर निंदा की तथा शूरवीरता के साथ जब्र का मुकाबला करने पर सिक्खों की पुरज़ोर प्रशंसा भी की। लाला लाजपत राय की अखबार 'वंदे मातरम' में लिखा गया :

नुसरत हम रकब उठाओ जिधर कदम,
तुमको मिलेगा फ़तह का तगमा अकालियो!
स्वराज का राज है अपने देश में,
होगा तुम्हारे हाथ में झंडा अकालियो!

'दर्पण' अख़बार में एक मुसलमान कवि लिखता है :

मुझे हैरत है कि क्यों गिर न पड़ा तू चकरा कर,
ज़ुल्म जब होते हुए देखे निराला तूने।
कौम के हाथ लरज़ने थे अकाली शाबाश,
खूब स्वराज के झंडे को संभाला तूने।

श्री अमृतसर साहिब में शहीद भाई प्रताप सिंघ प्रबंधक समिति द्वारा भाई जी के नाम पर 'शहीद बाबा प्रताप सिंघ मेमोरियल सीनियर सेकंडरी स्कूल' और एक 'हाई स्कूल' चलाया जा रहा है।

भाई प्रताप सिंघ की याद में कोट बाबा दीप सिंघ, श्री अमृतसर साहिब में एक गुरुद्वारा साहिब सुस्थित है।

कभी १९४७, कभी १९८४ : जख्म अभी बाकी हैं

–स. सतबीर सिंघ लांबा *

यह दास्तान है मेरे परिवार की। सन् १९४७ में भारत-पाक विभाजन के समय मेरे दादा जी को पश्चिमी पंजाब (वर्तमान में पाकिस्तान का भूभाग) से पूरबी पंजाब (भारत का पंजाब प्रांत) में आकर शरण लेनी पड़ी। उस वक्त मेरे परिवार की बड़े स्तर पर आर्थिक बर्बादी हुई। उस वक्त के दर्द को बयाँ करते वक्त मेरी दादी जी के नेत्रों से अश्रुधारा अविरल चलने लगती थी। अपना पैतृक स्थान, अपना व्यवसाय, अपने निकटवर्तियों को छोड़ कर, ऊपर (विभाजन) बँटवारे का दर्द लिए जीना, मानों हर पल मौत के आलिंगन का एहसास था।

इसी दौर में, सन् १९४७ में ही मेरे दादा जी पर किसी एक रोग का भयानक हमला हुआ और वे भगवान को प्यारे हो गए। मेरे पिता जी की आयु उस समय एक वर्ष थी। उन्हें अपने पिता जी अर्थात् मेरे दादा जी का चेहरा भी याद न था। कोई बाल एक वर्ष की आयु में भला क्या याद रख सकता था! दो देशों के विभाजन में से उपजा बर्बादी का दर्द मेरे पूर्वजों के लिए किसी अभिशाप से कम नहीं था।

पंजाब में रहते हुए मेरी दादी जी ने मेरे पिता जी को जैसे-तैसे पढ़ाया-लिखाया। समय का चक्कर चला तो सुखी जीवन की आशा लिए मेरे पिता जी अपनी दादी एवं चाचा के पास बिहार के शहर धनबाद (वर्तमान में झारखंड का एक नगर) आ गए। पिता जी की शादी हुई और हम छ: भाई-बहनों का जन्म हुआ। मेरे पिता जी की मेहनत रंग लाकर उनके कारोबार में वृद्धि कर रही थी। नेक स्वभाव के कारण पिता जी की ख़्याति चारों ओर फैल रही थी।

समय ने एक बार फिर करवट ली। सन् १९८४ आया। देश की प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी थी। इंदिरा गाँधी की हत्या उसके ही अंगरक्षकों द्वारा कर दी गई। पूरे सिक्ख समाज के प्रति देश में नफरत की ज्वाला भड़क उठी। एक मौत का बदला सिक्खों का नरसंहार कर लिए जाने की आवाजें उठने लगी। जो सिक्खों की विरासत को जानते हुए सिक्खों के साथ स्नेहपूर्वक व्यवहार किया करते थे वे भी सिक्खों के शत्रु बन बैठे। देश के विभिन्न इलाकों में सिक्खों का नरसंहार किया जाने लगा। उन इलाकों में से धनबाद भी एक था। लोकतंत्र की मर्यादा, देश का कानून, प्रशासनिक प्रबंध, देश

*मकान नं : १२२-बी, कृष्णा सकेर-२, बटाला रोड, अमृतसर– फोन : ७८८९२-४०२७२

की भ्रातृ-भावना, मैत्री-भावना आपसी मेल-मिलाप का लगाव एक बार सब कुछ थम-सा गया था। बस, कुछ चुनिंदा 'देशभक्तों' का अत्याचार चरम सीमा को पार कर चुका था। देश के रक्षक, भक्षक बन गए थे। अराजक तत्वों ने मेरे घर पर भी आक्रमण कर दिया। इस जानलेवा आक्रमण में मेरे पिता जी बम से घायल कर दिए गए।

मेरे परिवार के लिए यह पीड़ा भारत-पाक विभाजन के दर्द को भी मात दे गई। दुनिया के एक बड़े लोकतांत्रिक देश में नियम-कानून-मर्यादा की धज्जियां उन्हीं लोगों द्वारा उड़ाई गईं जो नियम-कानून-मर्यादा के निर्माता कहे जाते हैं। मेरे जैसे कई सिक्खों के साथ यह दर्दनाक घटना घटी।

मैं और मेरा परिवार आज भी इंसाफ के लिए व सरकारी चौखटों पर भटक रहा है। कई आयोग बन गए, कई बार जाँच-पड़ताल हो गई, मगर इंसाफ अभी भी नहीं मिल पा रहा है।

पहले १९४७ के देश-विभाजन की बर्बादी ने मारा और बचाखुचा १९८४ का सिक्ख नरसंहार मार गया। सिक्खों के उत्पीड़न की साक्षी है मेरे परिवार की दर्द भरी दास्तान।

उपहार ऐसा जो जीवन भर याद रहे!

यह बात हर एक आम व खास व्यक्ति के मन को कचोटती रहती है कि वो अपने मित्रों, सम्बंधियों को यदि उपहार दे तो क्या दे। किसी के जन्म–दिन आदि या किसी विशेष दिवस पर किसी को कुछ भेंट किया जाए तो ऐसा उपहार हो जिसे स्वीकार करने वाला जिंदगी भर याद रखे। इसके लिए अब ज्यादा सोचने और चिंता करने की जरूरत नहीं है। जीवन भर का उपहार है—— 'गुरमत ज्ञान'। उपहार भी ऐसा कि जब प्रत्येक माह मित्र आदि के घर पर जाकर डाकिया 'गुरमत ज्ञान' की प्रति थमाएगा तो आपका मित्र आपका शुक्रिया करता नहीं थकेगा। आप अपने मित्र या किसी सम्बंधी को केवल १००/- रुपये में उपहारस्वरूप 'गुरमत ज्ञान' का आजीवन सदस्य बना दीजिए और हासिल कीजिए अपने मित्र की जीवन भर की खुशियां। यह सौदा बेहद सस्ता एवं लाभकारी रहेगा। आज ही मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट के जरिए चंदा भेजकर अपने मित्र या सम्बंधी को 'गुरमत ज्ञान' का आजीवन सदस्य बनाकर उसे इस बहुमूल्य उपहार से निवाजें!

-संपादक ।

ख़बरनामा

सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के आधार पर
बंदी सिंघ तुरंत रिहा किये जाएं : एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी

श्री अमृतसर साहिब : १३ अगस्त : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने सुप्रीम कोर्ट द्वारा कैदियों को सज़ा पूरी होने के बाद भी जेल में रखने के विरुद्ध दिए निर्देशों का विरोध करते हुए बंदी सिंघों की रिहाई की माँग की है। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा सज़ा पूरी करने वाले कैदियों को रिहा करने के निर्देश मानवाधिकारों का प्रतिनिधित्व है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने केंद्र सरकार और सम्बन्धित राज्य सरकारों से अपील की कि इस फ़ैसले की रौशनी में बंदी सिंघों को तुरंत रिहा किया जाये, क्योंकि इन्होंने उम्र कैद से भी अधिक सज़ा काट ली है।

उन्होंने कहा कि भाई गुरदीप सिंघ खेड़ा, भाई बलवंत सिंघ राजोआणा, भाई जगतार सिंघ हवारा, भाई दविंदरपाल सिंघ (भुल्लर), भाई जगतार सिंघ तारा सहित अन्य लोगों ने लगभग ३० वर्ष से अधिक समय जेल में बिताया है, परन्तु सरकारी नीतियों के कारण उन्हें रिहाई नहीं मिल रही। उन्होंने कहा कि यह न केवल मानवाधिकारों और संविधान का घोर उल्लंघन है, बल्कि सिक्ख भावनाओं के साथ भी बेइन्साफ़ी है, जिससे पंजाब तथा सिक्ख भाईचारे में आक्रोश बढ़ रहा है। सरकारों द्वारा बंदी सिंघों के साथ की जा रही यह बेइन्साफ़ी, न्याय की भावना को ठेस पहुंचाती है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट का यह फ़ैसला बंदी सिंघों के लिए न्याय का रास्ता खोलता है और सरकारों को इसे लागू कर बंदी सिंघों को रिहा करना चाहिए। उन्होंने सिक्ख भाईचारे को भी अपील की कि इस मुद्दे पर एकता के साथ खड़े रहें और न्याय के लिए आवाज़ बुलंद करें। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी इस मामले में हर संभव कानूनी कदम उठाएगी।

अमृतधारी सरपंच को कृपाण पहन कर लाल किले पर जाने से
रोकने वाली घटना की एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने की निंदा

श्री अमृतसर साहिब : १७ अगस्त : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने १५ अगस्त को लाल किले पर आयोजित समारोह में विशेष बुलावे पर गए नाभा के निकटवर्ती एक गाँव के अमृतधारी गुरसिक्ख सरपंच स. गुरधिआन सिंघ को कृपाण पहने होने के कारण दाख़िल होने से रोकने की कड़ी निंदा करते हुए इसे सिक्ख विरोधी मानसिकता का प्रदर्शन करार दिया है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि स. गुरधिआन सिंघ को विशेष रूप से बुलावा भेजे

जाने के बावजूद भी धार्मिक-चिह्न 'कृपाण' पहने होने के कारण समारोह में जाने से रोकना अपने ही देश में बेगानगी वाला व्यवहार है।

एडवोकेट धामी ने कहा कि सिक्खों ने देश की आज़ादी के लिए कुर्बानियां दी हैं, जबकि देश आज़ाद होने से लेकर अब तक सिक्खों के साथ हमेशा भेदभाव हो रहे हैं। देश के संविधान में मिले अधिकारों से भी सिक्खों को वंचित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह कैसा आज़ादी दिवस है, जिसमें देश के बाशिंदों को अपनी धार्मिक परंपराएं निभाने से भी रोका जाये। उन्होंने कहा कि पाँच ककार सिक्ख जीवन का अहम हिस्सा हैं जिन्हें सिक्ख कभी भी अपने से जुदा नहीं कर सकता। उन्होंने सरकार से माँग की कि इस मामले के दोषी अधिकारियों के ख़िलाफ़ सख़्त कार्रवाई की जाये।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कर्मचारियों द्वारा दो दिन का वेतन बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए देने का फ़ैसला

श्री अमृतसर साहिब : २ सितंबर : पंजाब के बहुत-से क्षेत्रों में बाढ़ के कारण हुई तबाही से लोगों के हुए बड़े नुकसान के मद्देनज़र शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कर्मचारी भी मदद के लिए आगे आए हैं। इसी के अंतर्गत कर्मचारियों द्वारा एक दिन का वेतन शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा किए जा रहे राहत-कार्यों में देने का फ़ैसला किया गया है।

इस सम्बंध में बात करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सचिव स. प्रताप सिंघ ने कहा कि इस आपदा की घड़ी में सिक्ख संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में पहले दिन से ही निरंतर सेवा निभा रही है। संस्था के कर्मचारी ख़ुद पीड़ित लोगों तक पहुँच कर उनकी सेवा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि किसी भी प्राकृतिक आपदा के समय शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कर्मचारियों ने महान सेवा निभाई है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कर्मचारी जहाँ प्रभावित क्षेत्रों में पहुँच कर सेवा करते हैं, वहां हर बार अपने वेतन में से भी ज़रूरतमंदों की सहायता के लिए आगे आ रहे हैं।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने बाढ़ प्रभावित क्षेत्र के लोगों को रोगों से बचाने के लिए रवाना की स्प्रे मशीनें

श्री अमृतसर साहिब : ८ सितंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में लोगों को रोगों से बचाने के लिए आज १० स्प्रे मशीनें विभिन्न क्षेत्रों में भेजी गईं। इस सम्बंध में बात करते हुए मुख्य सचिव स. कुलवंत सिंघ मंनण ने बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर

सिंघ धामी के निर्देशानुसार जहाँ बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में राहत कार्य लगातार चल रहे हैं, वहाँ बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में बीमारियाँ फैलने की आशंका के मद्देनज़र शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा स्प्रे मशीनों के माध्यम से दवा का छिड़काव किया जायेगा। उन्होंने कहा कि इस मकसद के लिए माननीय प्रधान साहिब के निर्देश पर १० स्प्रे मशीनें शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान कार्यालय से बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के लिए भेजी गई हैं तथा आने वाले दिनों में और मशीनें भी भेजी जाएंगी। इन मशीनों के ज़रिये हर गाँव तक पहुँच कर दवा का छिड़काव किया जायेगा, ताकि मच्छर तथा अन्य ज़हरीले कीड़ों से बचाव किया जा सके।

मुख्य सचिव स. कुलवंत सिंघ मंनण ने बताया कि इन स्प्रे मशीनों की सेवा जलंधर की संगत द्वारा की गई है, जिनमें स. सतपाल सिंघ मुलतानी रिची ट्रेवल, स. अमरबीर सिंघ मोंटी, स. गुरदीप सिंघ रावी, स. इंदरप्रीत सिंघ कालड़ा और बीबी बरिंदर कौर होठी शामिल हैं। उन्होंने कहा कि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के लिए जहाँ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी बड़ी सेवाएं कर रही है, वहाँ संगत द्वारा भी बड़ा सहयोग दिया जा रहा है। उन्होंने राहत कार्यों में सहयोग करने वाली संगत का धन्यवाद किया।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य भाई रजिंदर सिंघ महिता, स. रणजीत सिंघ (काहलों), ओएसडी स. सतबीर सिंघ, सचिव स. प्रताप सिंघ, अतिरिक्त सचिव स. प्रीतपाल सिंघ, जनरल मैनेजर स. भगवंत सिंघ धंगेड़ा, उप सचिव स. कुलदीप सिंघ रोडे, स. हरभजन सिंघ वक्ता, सुप्रिंटेंडेंट स. निशान सिंघ आदि उपस्थित थे।

कार्यकारिणी समिति ने बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए प्राथमिक स्तर पर २० करोड़ रुपए आरक्षित रखने का किया फ़ैसला

श्री अमृतसर साहिब : ११ सितंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी के नेतृत्व में कार्यकारिणी समिति की आज हुई सभा में बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए प्राथमिक स्तर पर २० करोड़ रुपए आरक्षित रखने का फ़ैसला करते हुए प्रभावित लोगों के लिए कई फ़ैसले लिए गए। सभा के बाद मीडिया के साथ बात करते हुए एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि पंजाब में बाढ़ के कारण लोगों का बड़ा नुकसान हुआ है। जहाँ किसानों की फसलें बरबाद हुई हैं, वहां ज़मीनों में आई रेत ने भी किसानों के लिए बड़ी मुसीबत खड़ी की है। प्रभावित गाँवों के गुरु-घरों का भी नुकसान हुआ है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी बाढ़ आने के दिनों से लेकर प्रभावित इलाकों में निरंतर कार्यशील रही है और आज की सभा में बाढ़ प्रभावित इलाकों से सम्बन्धित विचार-चर्चा के बाद शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा प्राथमिक स्तर पर २० करोड़ रुपए आरक्षित रखने का फ़ैसला किया गया है।

उन्होंने कहा कि बाढ़ प्रभावित किसानों के लिए सबसे बड़ी समस्या खेतों को समतल कर उपजाऊ बनाना है, जिसके लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ८ लाख लीटर डीज़ल ज़रूरतमंदों को देगी। इसके साथ ही १० एकड़ से कम ज़मीन वाले किसानों को अच्छी गुणवत्ता का गेहूँ का बीज भी दिया जायेगा।

एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि बाढ़ से प्रभावित हुए गुरुद्वारा साहिबान को भी ५०-५० हज़ार रुपए की सहायता दी जायेगी। इसके साथ ही जिन बच्चों की किताबें ख़राब हुई हैं, उन ज़रूरतमंद बच्चों को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा मुफ़्त किताबें दी जाएगी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि बाढ़ प्रभावित इलाकों में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा भेजी गई मेडिकल टीमें लोगों की सेवा कर रही हैं। अब पानी उतरने के बाद पैदा हो रही नई समस्याओं के मद्देनज़र श्री गुरु रामदास मेडिकल कॉलेज से ५० मेडिकल वैन इन इलाकों में तैनात की जाएंगी। उन्होंने यह भी कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से लंगर तथा ज़रूरतमंदों को राशन देने का कार्य पहले की तरह निरंतर जारी रखा जायेगा।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने पंजाब सरकार से माँग की कि किसानों को दिए जाने वाले डीज़ल पर से वैट ख़त्म किया जाये, ताकि लोगों की अधिक से अधिक सहायता की जा सके। उन्होंने संगत से अपील करते हुए कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा किये जा रहे राहत कार्य गुरु की गोलक तथा संगत के सहयोग द्वारा हो रहे हैं, इसलिए संगत खुलदिली के साथ इन कार्यों में योगदान प्रदान करे। इसी दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व कर्मचारियों की जत्थेबंदी द्वारा बाढ़ पीड़ितों के लिए १ लाख १ हज़ार रुपए का चेक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी को सौंपा गया। कार्यकारिणी कमेटी में बाबा बलजिंदर सिंघ राड़ा साहिब वालों के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित कर उन्हें श्रद्धाँजलि भेंट की गई।

इस सभा में वरिष्ठ उपाध्यक्ष स. रघूजीत सिंघ (विर्क), कनिष्ठ उपाध्यक्ष स. बलदेव सिंघ कल्याण, महासचिव स. शेर सिंघ मंडवाला, सदस्य स. अमरीक सिंघ विछोआ, स. सुरजीत सिंघ तुगलवाल, स. परमजीत सिंघ ख़ालसा, स. सुरजीत सिंघ गढ़ी, स. बलदेव सिंघ कायमपुर, स. दलजीत सिंघ भिंडर, स. सुखहरप्रीत सिंघ रोडे, स. रविंदर सिंघ ख़ालसा, स. जसवंत सिंघ पुड़ैण, स. परमजीत सिंघ रायपुर, ओएसडी स. सतबीर सिंघ (धामी), सचिव स. प्रताप सिंघ, स. सुखमिंदर सिंघ, अपर सचिव स. गुरिंदर सिंघ मथरेवाल, निजी सचिव स. शाहबाज सिंघ, जनरल मैनेजर स. भगवंत सिंघ धंगेड़ा, उप सचिव स. बलविंदर सिंघ खैराबाद, स. हरभजन सिंघ वक्ता, कानूनी सलाहकार स. अमनबीर सिंघ सिआली आदि भी उपस्थित थे।

सुलतान-उल-कौम
सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया

Registered with PRGI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN

October 2025
DHARAM PARCHAR COMMITTEE,
Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

साका श्री पंजा साहिब का दिल दहलाने वाला दृश्य

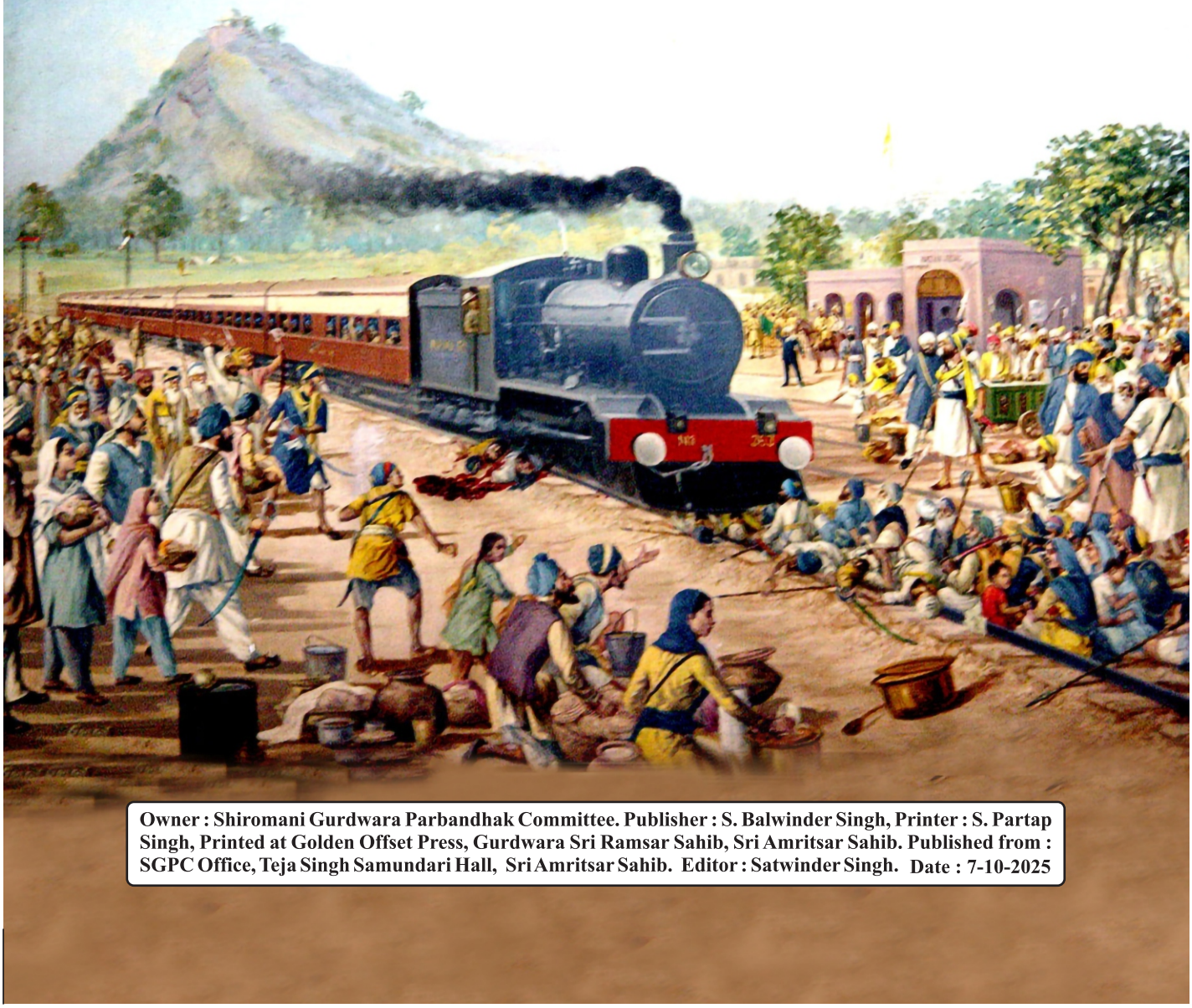

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher : S. Balwinder Singh, Printer : S. Partap Singh, Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from : SGPC Office, Teja Singh Samundari Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh. Date : 7-10-2025